1. बकरईद
2 स्वामी दयानन्द और कुरान
2. भारत में ईसाई

महेश प्रसाद मौलवी

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 5345
दयानन्द महिला मह

16. 4
20489
मु० कि० ना०
... पुस्तकालय
पुस्तक क्रमांक 5245
दयानन्द महिला महा

ओ३म्

बक़रईद

[...श प्रसाद मौलवी आलिम फ़ाज़िल]

शब्द का वास्तविक स्वरूप

बहुत से लोगों का ख्याल है कि बक़रीद शब्द वस्तुतः 'बकरा' और 'ईद' शब्दों से बना है। तात्पर्य यह कि वह त्यौहार जिसमें बकरा मारा जाय। पर वास्तविक बात यह है कि शब्द असल में 'बक़रईद' (بقرعید) है। बक़र और ईद शब्दों से बना है। बक़र का अर्थ अरबी भाषा में बैल अथवा गाय के हैं और ईद शब्द वास्तव में प्रसन्नता तथा ख़ुशी का बोधक है। निदान बक़रीद शब्द का तात्पर्य यह हुआ कि ख़ुशी का वह त्यौहार या दिन जिसमें गाय या बैल की कुर्बानी होती है।

ईरान एक मुसलमानी देश है। वहाँ का उत्तराधिकारी भी मुसलमान है। वहाँ गाय बैल होते हैं। सन् १९२९ ई० में मैं वहाँ प्रचारार्थ गया था। बक़रीद मुझे वहीं पड़ी थी। जिस भाग में मैं था, उसमें कहीं गाय की कुरबानी नहीं हुई थी। दुम्बे भेड़ों ही की कुरबानी वहाँ हुई थी। इसके सिवा मुझे यह भी बतलाया गया था कि दुम्बे की कुरबानी का चलन साधारणतः सारे देश में है। गाय या बैल की कुरबानी शायद ही कोई करता हो तो हो। *

भारत के बहुतेरे मुसलमान लोग बक़रीद के दिन गाय या

---

* ईरान की बक़रीद तथा अन्य का पूरा वृत्तान्त 'मेरी ईरान यात्रा' नामी सचित्र हिन्दी पुस्तक में देखा जा सकता है।

बैल की कुरबानी को सुगम व अच्छा समझते हैं। अथवा यह कहना चाहिये कि उन्होंने गाय या बैल की कुरबानी को महत्ता का एक विशेष स्वरूप दे रखा है। इसी कारण बक़रीद नाम पड़ा है। पर यह बात भी भली भाँति ज्ञात रहे कि इस शब्द का चलन भारतवष की ही सीमा के भीतर है, क्योंकि यह भारत में ही गढ़ा गया है। अरबी या फ़ारसी भाषा में इस शब्द का कहीं प्रयोग नहीं है।

अरबी में इस त्यौहार का नाम 'ईदुल अज़हा' है। यह 'ईद' और 'अज़हा' से (عيد الاضحى) बना है। 'ईद' का अर्थ ख़ुशी और अज़हा का अर्थ है—कुरबानी का दिन, कुरबानी का पशु अर्थात—वह ईद या ख़ुशी का दिन जिसमें कुरबानी की जाती है। परन्तु हम किसी-किसी जन्त्री या छुट्टियों की सूची में इदुज्जुहा (عيد الضحى) शब्द लिखा हुआ देखते हैं, जो वस्तुतः 'ईदुल अज़हा' से ही बिगड़ कर बना है। इस्लामी जगत् में बक़रीद की महत्ता बहुत ज्यादा है। इस कारण इसको 'ईद कबीर' अर्थात् 'बड़ी ईद' भी कहा जाता है। पर इस विचार से कि इस ईद के दिन 'कुरबानी का होना' एक मुख्य काम है, इसीलिये इसे 'ईद कुरबाँ' कहते हैं, इसके सिवा 'योमुन नहर' भी इस ईद का एक नाम है, अरबी में योम शब्द का अर्थ है—दिन, और नहर शब्द का अर्थ है—ऊँट को मारना, छाती पर बाण मारना। तात्पर्य यह कि जिसमें ऊँट की कुरबानी होती है। क्योंकि अरब में ऊँट एक प्रधान पशु है, इसी कारण त्यौहार का नाम 'योमुन नहर' पड़ा है। इसके सिवा यह भी ज्ञात रहे कि टर्की व मिश्र में इस त्यौहार का नाम 'ईद बैराम' अर्थात् 'आनन्द मंगल मय ख़ुशी का दिन' है। भारतवर्ष में अधिक प्रचलित शब्द बक़रीद ही है, इस कारण मैंने इस शब्द को ही अधिक प्रयोग किया है। बक़रीद, ईदुल अज़हा, ईद कबीर, ईद बैराम व

20489

ईद ... शब्दा म से कोई भी शब्द कुरान में नहीं आया। उर्दू के एक सुप्रसिद्ध कवि सैयद इन्शा हुए हैं। उनका देहान्त सन् १८१४ ई० में हुआ था। उन्होंने 'ईद कुरबाँ' शब्द को एक उर्दू पद्य में बड़ी ख़ूबसूरती के साथ निबाहा है—

यह अजीब माजरा है कि ब रोज़ ईद कुरबाँ
वही ज़िबह भी करे है, वही ले सवाब उलटा।

ईरान में अनेक पठित व अपठित ईरानियों से बक़रीद के संबंध में मैंने बातचीत की थी, मैंने जानबूझ कर बक़रीद शब्द का प्रयोग किया था, ताकि मालूम कर सकूँ कि भारत के इस गढ़े गये शब्द को लोग समझ सकते हैं कि नहीं; परन्तु इसे कोई न समझ सका। 'ईदुल अज़हा' शब्द को केवल पढ़े लिखे और 'ईद कुरबाँ' को सब लोग ही समझ सके; क्योंकि 'ईद कुरबाँ' शब्द वहाँ अधिक प्रचलित है। मेरा अनुमान ही नहीं; बल्कि दृढ़ विश्वास है कि जिस प्रकार 'बक़रीद' शब्द को ईरान में कोई नहीं समझ सका, उसी प्रकार किसी अन्य मुसलमानी देश में यदि यह शब्द प्रयोग किया जायगा, तो वहाँ भी कोई व्यक्ति कदापि न समझ सकेगा कि इसका वास्तविक अभिप्राय क्या है।

पुत्र-बलिदान की आज्ञा

मुसलमान लोगों के जो बड़े-बड़े पैग़म्बर (ईश्वरीय दूत) हुए हैं, उनमें से एक हज़रत इब्राहीम साहब भी थे। अनेक इतिहासों में लिखा है कि हज़रत इब्राहीम ने स्वप्न में देखा कि ख़ुदा ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं अपने प्यारे पुत्र को उसके निमित्त बलिदान कर दूँ, इसी आज्ञा के अनुसार आप अपने प्यारे पुत्र को मक्का के समीप उस स्थान पर लेगये, जो अब क़ुरबानी का पवित्र स्थान समझा जाता है और उसके गले पर छुरी फेरी; किन्तु ख़ुदा की आज्ञा से हज़रत

जबरील फरिशता ने छुरी को उलट दिया और एक दुम्बा वहाँ .खुदा ने प्रगट किया। उसी को खुदा के निमित्त हजरत ने बलिदान में चढ़ाया। अतः इसी घटना के उपलक्ष में बकरीद के त्यौहार की नीव पड़ी है और यह त्यौहार मुसलमानों में वस्तुतः यहूदियों से आया है।

कुरान का मत

कुरान शरीफ़ में हज़रत इब्राहीम साहब तथा उनके दोनों पुत्रों का चर्चा है। परन्तु यह चर्चा कुरबानी के विषय में बहुत विस्तृत नहीं। इसके सिवा कुरबानी की महिमा बतलाई गई है। हमारे देश में कहीं पर मुसलमानों ने कुरबानी के पशु विशेषतः गाय या बैल को सजा-बजा कर जलूस निकालना अच्छा माना; किन्तु ऐसा करने के लिये कुरान शरीफ में स्पष्ट या संकेत रूप में ही कोई वर्णन नहीं और न कुरान शरीफ में इसी बात पर ज़ोर दिया गया है कि गाय या बैल ही कुरबान किया जावे बल्कि साफ-साफ यह कहा गया है कि चार पैर वाले पशु की कुरबानी की जाय, जिसका तात्पर्य यह है कि ऊँट, ऊँटनी, भैंस, भैंसा, बैल, गाय, भेड़ा, भेंड़ी व बकरा, बकरी पशु जिनको .खुदा ने खाने के निमित्त वर्जित नहीं किया उन्हीं की कुरबानी हो सकती है।

वलेकुल्ले उम्मतिन जअलना मन् सकन् लेयज़्कुरू इस्मल्लाहे अलामा रज़क़ हुममिन बहीमतिल अन आमे। (कुरान शरीफ हज्जमें रकू ५ की आयत १)

अर्थ—और प्रत्येक समुदाय के लिये हम (अल्लाह) ने कुरबानी नियुक्त की, ताकि उन चार पगवाले पशु (जिन्हें मैंने) मनुष्यों को दे रक्खा है (उनको मारते समय) लोग अल्लाह का नाम लें।

नोट—यहाँ उन पशुओं की ओर संकेत है, जिनको खाने के लिये आज्ञा है। कुरबानी के सम्बन्ध में कुरान में यह भी आया है कि पशुओं का मास व खून खुदा को नहीं पहुँचा करता है, बल्कि मनुष्य की श्रद्धा भक्ति खुदा को पहुँचा करती है :—

लन् यना लल्लाहा लोहू-मोहा वला दिमा ओहा व लाकिनयना लोहूत्तकवा मिनकुम। (कुरान सूरः हज्ज में रुकू ५ की आयत ३)

अर्थ—खुदा तक न तो (कुरबानी) के मांस ही पहुँचते हैं और न इनके खून। बल्कि उसके पास तक तुम्हारी श्रद्धा-भक्ति पहुँचा करती है। निस्सन्देह यही भाव था, जिसकी परीक्षा के निमित्त खुदा ने हजरत इब्राहीम को आज्ञा दी थी कि अपने पुत्र को खुदा के निमित्त कुरबानी करें।

अरबी में हज्ज शब्द का अर्थ है—इरादा करना किसी के पास बहुत आना जाना। परन्तु एक विशेष काल में मक्का नगर में जाना और वहाँ की पवित्र मसजिद काबा में नियत कर्म काण्ड के साथ प्रार्थना व उपासना करने को हज्ज कहा जाता है। कुरबानी वास्तव में हज्ज का एक प्रधान अंग है। पर यह कार्य उनके लिये भी लाभदायक माना जाता है, जो हज्ज करने नहीं जाते। यही कारण है कि भारत में भी कुरबानियाँ हुआ करती हैं।

बलिदान की मुख्य शर्तें

जो व्यक्ति हज्ज के लिये जाय, यदि उसे कुरबानी प्राप्त न हो अर्थात् वह कुरबानी न कर सके, तो तीन दिनों का रोजा (व्रत) वहाँ रख ले और अपने घर लौट कर सात दिन रोजा रखे। फमन लम यजिद फस्यामो सलासते अय्यामिन फिलहज्जे व सब अतिन इज रजातुम (कुरान-सूरः बकर में रुकू २४ की आयत ८)

अर्थ—और जिसको कुरबानी प्राप्त न हो, तो तीन रोजे हज्ज के दिनों में (रखले) और सात जब लौट आये।

अनेक भारतीय मुसलमान लेखकों का यह मत पाया जाता है कि कुरबानी प्रत्येक मुसलमान के लिये जरूरी नहीं है, जो सम्पन्न हो, केवल वही करे। सम्पन्न की व्याख्या यह की गई है कि जो अपनी आवश्यक वस्तुओं (अर्थात् रहने का मकान, पहिनने के कपड़े और घर की आवश्यक चीज़ों) के सिवा साढ़े सात तोला सोना अथवा साढ़े बावन तोला चाँदी का मालिक हो। अब तक मैंने केवल भारत के ही अनेक मुसलमान लेखकों के लेखों में इस आशय की बात देखी है कि एक बकरा या भेंड़ा की कुरबानी का पुण्य केवल एक मनुष्य को, एक गाय या ऊँट की कुरबानी का फल ७ व्यक्तियों को मिलता है, पर स्पष्ट रहे कि उक्त प्रकार का भाव कुरान में कहीं नहीं है और न भारत से बाहर के किसी मुसलमान लेखक का लेख (उक्त आशय का) अब तक मुझे मिला है।

मौलवी आलिम फ़ाज़िल
महेशप्रसादजी की लिखी हुई कुछ पुस्तकें

(हिन्दी)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ।।।), महर्षि दयानन्द कहाँ और कब ।), स्वामी दयानन्द और कुरान ।), गाय और कुरान ―), बकर ईद)।।, अमर सत्यार्थप्रकाश)।।, सत्यार्थ प्रकाश की व्यापकता ।), विद्यामन्दिर ।―), मनोरञ्जक हिसाब ।―), ज्ञान-गुदड़ी ।), पुष्पाञ्जलि ।।), मेरी ईरान-यात्रा २),

(अँगरेजी)

The Immortal Satyarth Prakash ―),

मिलने का पता―

मैनेजर―आलिमफ़ाज़िल बुकडिपो,

११५ मुहतशिमगंज, इलाहाबाद (U. P.)

प्रकाशक―आलिम फ़ाज़िल बुकडिपो ११५ मुहतशिमगंज, इलाहाबाद

मुद्रक―विश्वप्रकाश, कला प्रेस, इलाहाबाद।

ओ३म्

गाय और कुरान

लेखक—महेशप्रसाद मौलवी आलिम फ़ाज़िल

क़ुरान शरीफ़ में गौ की क़ुरबानी क्या आवश्यक बतलाई गई है ? ख़ुदा को प्रसन्न करने के लिए (मुसलमानों के यहाँ) क्या यही मार्ग है कि वे लोग गाय अवश्य मारा करें ? क्या गो-मांस की प्रशंसा क़ुरान शरीफ़ में की गई है अथवा गो-मांस को स्वास्थ्य के निमित्त बहुत अच्छा बताया है जिसके कारण बहुतेरे मुसलमान लोग गाय मारा करते हैं ? इस प्रकार के प्रश्न बहुधा लोग मुझसे पूछा करते हैं। इसलिए मैंने उचित समझा कि क़ुरान शरीफ़ में गाय के विषय में जो कुछ चर्चा हो, उसको यदि एक साथ एकत्र कर दिया जाय और सब के सम्मुख रख दिया जाय तो लोग स्वयं यह नतीजा निकाल लेंगे कि उक्त प्रकार के प्रश्नों का उत्तर क़ुरान से (जो कि समस्त मुसलमानों की दृष्टि में सर्वमान्य है) क्या मिलता है।

क़ुरान के बाद जिन ग्रन्थों का आदर मुस्लिम जगत् में है वह 'हदीस' के नाम से विख्यात हैं किन्तु मैं क़ुरान के सिवा हदीस या किसी ग्रन्थ के आधार पर कुछ नहीं लिखना चाहता क्योंकि (क़ुरान के सिवा) अन्य सारे ग्रन्थों को समस्त मुसलमान पूर्ण रूप से ठीक नहीं मानते। उनके विषय में परस्पर बड़ा मतभेद है। परन्तु यह भी ज्ञात रहे कि क़ुरान में अनेक स्थान ऐसे भी हैं जहाँ इतिहास की शरण लिये बिना काम ही नहीं चल सकता क्योंकि केवल क़ुरान के ही शब्दों से पूरा अर्थ नहीं निकलता। ऐसी अवस्था में मुझे भी इतिहास की शरण लेनी पड़ी है। इसके सिवा यह भी जान लेना चाहिए कि

गाय-सूचक शब्द क़ुरान की जिस आयत (वाक्य) में आया है मैंने उसके केवल थोड़े से ही भाग को देने में सन्तोष नहीं किया बल्कि उस स्थान से सम्बन्ध रखनेवाले आगे-पीछे के पूरे वाक्य या वाक्यों को मैंने लिख दिया है ताकि लोग भली भाँति जान सकें कि क़ुरान में गाय के विषय में चर्चा क्या है।

अरबी भाषा में प्रायः 'बक़रतुन' अर्थात् 'बक़रः' शब्द गाय और 'बक़रुन' अर्थात् 'बक़र' शब्द बैल के लिए आता है। सबसे पहली बात यह है कि क़ुरान की ११४ सूरतों (अध्यायों) में से दूसरी सूरत (अध्याय) में समस्त क़ुरान का बारहवाँ भाग है। उस भाग का नाम ही 'सूरतुल्बक़रः' या 'सूरः बक़र' अर्थात् गाय-विषयक सूरत (अध्याय) है क्योंकि उस अध्याय में गाय का वर्णन विशेष रूप से है। अस्तु, सब से पहले क़ुरान के उसी अध्याय में गाय के विषय में यह आया है—

प्रथम स्थल

واذقال موسى لقومه ان الله يامركم ان تذبحوا البقرة قالوا اتتخذنا هزوا قال اعوذ بالله ان اكون من الجهلين *

قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ماهي قال انه يقول انها بقرة لا فارض ولا بكر عوان بين ذالك فافعلوا ماتؤمرون *

قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما لونها قال انه يقول انها بقرة صفراء فاقع لونها تسر الناظرين *

قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ماهي ان البقر تشابه علينا وانا ان شاء الله لمهتدون *

قال انه يقول انها بقرة لا ذلول تثير الارض ولا تسقي الحرث مسلمة لا شية فيها قالوا الئن جئت بالحق فذبحوها وما كادوا يفعلون *

واذ قتلتم نفسا فادارأتم فيها والله مخرج ما كنتم تكتمون *

فقلنا اضربوه ببعضها كذلك يحيي الله الموتى ويريكم آياته لعلكم تعقلون * (سورة البقر—آيت ٦٦—٧٢)

(वइज़् क़ाला मूसा.....लअल्लाकुम ताक़लून)

भावार्थ—और जब मूसा* ने अपनी जातिवालों से कहा कि निस्सन्देह अल्लाह तुमको आज्ञा देता है कि तुम एक गाय मारो। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमसे हँसी करते हो? मूसा ने कहा, मैं अल्लाह की शरण चाहता हूँ कि मैं अज्ञानी बनूँ।

उन्होंने कहा कि तू अपने पालनहार से हमारे निमित्त पूछ कि वह गाय कौन सी है। इस बात को वह स्पष्ट रूप से हमें बतला दे। मूसा ने कहा कि निस्सन्देह अल्लाह कहता है कि वह गाय ऐसी है कि न तो अभी बूढ़ी है और न अभी बछिया ही है। इन दोनों के बीच की आयुवाली है। अतः जो कुछ तुम्हें आज्ञा हुई है उसे पूरा करो।

उन्होंने कहा कि तू अपने पालनहार से हमारे निमित्त पूछ कि वह गाय किस रंग की है। मूसा ने कहा कि निस्सन्देह अल्लाह कहता है कि वह गाय पीली है और ख़ूब पीली है यहाँ तक कि देखनेवालों को उसका रंग बहुत सुन्दर मालूम होता है।

उन्होंने कहा कि तू अपने पालनहार से हमारे निमित्त पूछ कि वह कौन सी है। इस बात को वह स्पष्ट रूप से बतला दे। क्योंकि हमको एक ही रंग की कई गायें प्रतीत होती हैं। और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम निस्सन्देह ठीक मार्ग पर होंगे।

मूसा ने कहा कि निस्सन्देह अल्लाह कहता है कि वह एक गाय है न ऐसी सधी हुई है कि ज़मीन को जोतती है और न उससे खेती ही सींची जाती है।

---

* लगभग ६ हज़ार वर्ष बीते कि हज़रत मूसा साहब एक बड़े पैग़म्बर हो चुके हैं। इनको न केवल मुसलमान ही बल्कि ईसाई व यहूदी लोग भी अपनाते हैं। इनका हाल 'क़िससुल अंबिया' قصص الانبيا नामी उर्दू किताब में विशेष रूप से है—लेखक।

वह पूर्ण रूप से ठीक है। उसमें कोई धब्बा नहीं है। उन्होंने कहा कि ऐ मूसा! तूने अब हमें ठीक ठीक बताया है। इस पर उन्होंने उसको ज़बह किया यद्यपि ऐसा करने के लिए वे तैयार न थे।

और जब तुमने एक व्यक्ति को मार डाला और उस व्यक्ति के लिए तुमने झगड़ा किया क्योंकि उसके घातक का ठीक पता तुम्हें नहीं था किन्तु अल्लाह उस बात को प्रकट करनेवाला है जिसको कि तुम छिपाते थे।

निदान हमने कहा कि उस मृतक को गाय के किसी टुकड़े से मारो। (ऐसा करने पर वह मृतक जी उठा।) इसी प्रकार अल्लाह मृतकों को जिलाता है अथवा जिलावेगा। और अपने शक्ति के चिह्नों को दिखाता है ताकि (सब कुछ) तुम्हारी समझ में आवे॥—सूरः बक़र, आयत ६६–७२

गाय क्यों वध कराई गई थी? इस बात की बाबत अनेक मुसलमान लेखक ही लिखते हैं कि एक यहूदी ने अपने एक सम्बन्धी को मार डाला था। कोई व्यक्ति कुछ पता न चला सका, इस कारण लाश को दूर रख आया। मृतक के मित्रों ने हज़रत मूसा साहब के समीप कुछ अन्य लोगों को दोषी ठहराया। उन लोगों ने इन्कार किया। अपराधी का पता चलाने के लिए अल्लाह ने आज्ञा दी कि एक गाय मारी जाय। अतः गाय मारी गई। फिर उस गाय के एक भाग से मृतक को मारा। वह जी उठा और अपने घातक का पता देकर फिर मर गया।

द्वितीय स्थल

क़ुरान में दूसरा स्थान (जहाँ गाय का वर्णन है) सूरतुल अनआम या सूरः अनआम अर्थात् पशु-विषयक अध्याय है। यह क़ुरान में छठा सूरः (अध्याय) है। इसमें आया है—

ومن الانعام حمولة وفرشا كلوا مما رزقكم الله ولا تتبعوا خطوات الشيطان انه لكم عدو مبين *

ثمنية ازواج من الضان اثنين ومن المعز اثنين قل آلذكرين

حرم ام الانثيين اما اشتملت عليه ارحام الانثيين نبيوني بعلم ان كنتم صادقين *

ومن الابل اثنين ومن البقر اثنين قل آ الذكرين حرم ام الانثيين اما اشتملت عليه أرحام الانثيين ام كنتم شهداء اذ وصكم الله بهذا فمن اظلم ممن افترى على الله كذبا ليضل الناس بغير علم ان الله لايهدي قوم الظلمين *

(سورة الانعام—آيت १४३—१४५)

(व मिनल् अन्आमे..... क़ौमज़्ज़ालिमीन)

भावार्थ—और पशु दो प्रकार के हैं, एक वह जो लादने में समर्थ हैं और दूसरे जो छोटे-मोटे हैं। हे लोगो! जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उसे खाओ। और शैतान का अनुकरण न करो क्योंकि वह निस्सन्देह खुले-ख़ज़ाना तुम्हारा वैरी है।

आठ जोड़े अल्लाह ने पैदा किये हैं। भेड़ में से (एक भेड़ा व एक भेड़ी) दो, और बकरी में से (एक बकरा व एक बकरी) जो दो हैं। कह (हे मुहम्मद)* कि अल्लाह ने (तुम्हारे लिए) भेड़ा और बकरा को हराम किया है या भेड़ी और बकरी को या उस (बच्चा) को जो बकरी या भेड़ी के पेट में हो। यदि (लोगो!) तुम्हारी बात ठीक है तो उसे बताओ।

ऊँट में से (एक ऊँट व एक ऊँटनी) दो, और गौ में से (एक गाय व एक बैल) जो दो हैं। कह (हे मुहम्मद!) कि अल्लाह ने ऊँट व बैल को हराम किया है या ऊँटनी व गाय को या उस (बच्चा) को जो गाय या ऊँटनी के पेट में हो। क्या तुम साक्षी थे जब अल्लाह ने ऐसा किया था? अतः

---

* क़ुरान हज़रत मुहम्मद साहब के द्वारा लोगों को मिला है। अतः क़ुरान के अनेक स्थानों में यह बात पाई जाती है कि जहाँ अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद साहब से कहा है कि तुम अमुक बात लोगों से पूछो या अमुक बात लोगों से कह दो—लेखक

उससे बढ़कर अत्याचारी और कौन है जो झूठी बात को अल्लाह के सिर मढ़ता है ताकि लोग बिना सोचे विचारे भटकें। सच तो यह है कि अल्लाह अत्याचारियों को ठीक मार्ग पर नहीं लाया करता।—सूरः अन्आम, आयत १४३—१४५

मुसल्मानी धर्म के जन्म से पहले अरब में नाना प्रकार के टुटके प्रचलित थे। अतः अरब लोग भेड़, बकरी, ऊँट और गाय में से किसी अवस्था में किसी के नर को व किसी समय किसी की मादा को और किसी दशा में (उक्त पशुओं में से) किसी पशु के बच्चे को हलाल या हराम समझते थे। उनका ऐसा समझना उचित नहीं था। इस कारण उनके उक्त रीति व रवाज का ऊपर सर्वथा खण्डन है और उनके विचारों की निन्दा की गई है।

तृतीय स्थल

गत अध्याय में जहाँ गाय की चर्चा है उसके निकट ही फिर गाय का वर्णन इन शब्दों में है :—

وعلى الذين هادوا حرمنا كل ذي ظفر ومن البقر والغنم
حرمنا عليهم شحومهما الا ما حملت ظهورهما او الحوايا او ما
اختلط بعظم ذلك جزيناهم ببغيهم وانا لصادقون *
(سورة الانعام—آيت ۱۴۷)

(व अलल्लज़ीना हादू.....व इन्ना लसादिकून)

भावार्थ—और जो लोग यहूदी हैं उन पर हमने (अल्लाह ने) प्रत्येक ना खूनवाले पशु को हराम किया है। और गाय व बकरी दोनों की चरबी हमने हराम की है किन्तु वह चरबी जो उनकी पीठ पर लगी हो अथवा अँतड़ियों पर या हड्डी से मिली हो, हमने उसको उनके लिए हराम नहीं किया। यह सज़ा हमने उन्हें उनके द्रोह के कारण दी है और निस्सन्देह हम सच्चे हैं।—सूरः अन्आम, आयत १४७

यहूदी लोग मिस्र में दास थे। हज़रत मूसा साहब के उद्योग से छूटे। किन्तु उन्होंने हज़रत मूसा की आज्ञा का पालन न किया। इस पर ख़ुदा ने आज्ञा दी कि यह सब एक काफ़ी समय तक अपना जीवन जङ्गल में व्यतीत

करें। ऐसी अवस्था में दूध दही ऐसे भोजन के हेतु और एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के निमित्त पशु उनके लिए बड़े उपयोगी और आवश्यक थे। इस कारण अल्लाह ने पशु हराम कर दिये थे ताकि उपयोगी पशुओं के मारे जाने की नौबत ही न आवे।

.कुरान शरीफ़ में बारहवाँ सूर: यूसुफ़ है जिसमें अन्तिम बार गौविषयक बातें हैं और इसमें सन्देह नहीं कि गाय के विषय में अब जो कुछ आवेगा वह गाय के मारने या खाने की बाबत नहीं है किन्तु मैं चाहता हूँ कि .कुरान में गाय के विषय में चाहे किसी प्रकार का वर्णन हो, वह सब का सब लोगों के सम्मुख रख दिया जावे। इस कारण निम्नलिखित बातों को लिख रहा हूँ :—

चतुर्थ स्थल

وقال الملك انى ارى سبع بقرات سمان ياكلهن سبع عجاف وسبع سنبلات خضر واخر يابسات يا ايها الملا افتونى فى رءياى ان كنتم للرويا تعبرون *

قالو اضغاث احلام وما نحن بتاويل الاحلام بعالمين *

وقال الذي نجا منهما واذكر بعد امة انا انبئكم بتاويله فارسلون *

يوسف ايها الصديق افتنا فى سبع بقرات سمان ياكلهن سبع عجاف وسبع سنبلات خضر واخر يابسات لعلى ارجع الى الناس لعلهم يعلمون *

(سورة يوسف—آيت ٤٣—٤٦)

(व क़ालल् मलिको...............लअल्लहम् यालमून)

भावार्थ—मिस्र देश के बादशाह ने कहा कि मैंने स्वप्न में देखा कि सात मोटी गायें सात दुबली गायों को खाती हैं और सात हरी बालें सात सूखी बालों को भी। हे दरबारवालो! मेरे स्वप्न को बताओ यदि तुम स्वप्न पर विचार कर सकते हो।

दरबारवालों ने उत्तर दिया कि यह खिन्न विचार हैं और हम स्वप्न के विचारने में समर्थ नहीं।

बादशाह का एक नौकर जो हज़रत यूसुफ़ साहब के साथ बन्दीख़ाना में था, जिसका स्वप्न हज़रत यूसुफ़ ने ठीक-ठीक विचारा था, वह बादशाह के पास था। उसे हज़रत यूसुफ़ साहब चिरकाल के बाद याद आये। उसने बादशाह से कहा कि आपको मैं स्वप्न का ठीक अर्थ बता सकता हूँ। अतः आप मुझे बन्दीख़ाना में हज़रत यूसुफ़ के पास जाने दीजिये जिन्होंने कि मेरा स्वप्न ठीक से विचारा था।

हे यूसुफ़ ! तुम स्वप्न के विचारने में सच्चे हो। अपना मत इस स्वप्न के लिए प्रकट कीजिए कि सात मोटी गायें सात दुबली गायों को खाती हैं और सात हरी बालें सात सूखी बालों को भी। इसका ठीक अभिप्राय बताइए कि लोग समझ सकें।—सूरः यूसुफ़, आयत ४३–४६

हज़रत यूसुफ़ साहब का काल हज़रत मूसा से भी कुछ पहले का है। यह भी एक पैग़म्बर थे। यह बड़े सुन्दर थे। इनके भाइयों ने इन्हें जंगल के कुएँ में डाला, पर इनको सौदागर कुएँ से निकालकर मिस्र में ले गया। वहाँ वह बादशाह के सचिव के दास बने। सचिव की स्त्री ने इन पर झूठा कलंक लगाया। यह जेल में डाले गये। वहाँ बादशाह के दो कैदी नौकरों का स्वप्न आपने बहुत ही ठीक विचारा। उनमें एक बादशाह का फिर नौकर बना।

बादशाह ने उक्त स्वप्न देखा। कोई विचार न सका। नौकर जो कैद से छूटकर आया था उसने हज़रत यूसुफ़ की बाबत और अपने स्वप्न की बाबत बादशाह को बताया। इस पर बादशाह ने नौकर को हज़रत यूसुफ़ साहब के पास भेजा। उन्होंने स्वप्न का ठीक ठीक अभिप्राय बताया। बादशाह बड़ा प्रसन्न हुआ और अन्त में एक दिन यह नौबत पहुँची कि वह स्वयं बादशाह हुए। इनका भी हाल उर्दू के "क़िससुल् अंबिया" में विस्तारपूर्वक है।

जानना चाहिए :—

(१) बक़र (بقر) शब्द का अर्थ है—बैल। बक़र शब्द का समस्त क़ुरान में तीन बार प्रयोग हुआ है। (क) दूसरी सूरत बक़र की आयत ७० में, (ख) छठी सूरत अन्आम की आयत १४५ और १४७ में एक-एक बार।

चेतावनी

(२) बक़रः या बक़रत (بقرة) का अर्थ है—गाय (अथवा बैल)। बक़रः शब्द समस्त क़ुरान में चार बार आया है। दूसरी सूरत बक़र की आयत ६७, ६८, ६९ और ७१ में से प्रत्येक में एक बार।

(३) बक़रात (بقرات) शब्द बक़रः का बहुवचन है। अर्थ है—गायें। बारहवीं सूरत यूसुफ़ की आयत ४३ व ४६ में एक-एक बार अर्थात् समस्त क़ुरान में बक़रात शब्द दो बार आया है।

क़ुरान में गाय के विषय में क्या है—इस बात का ज्ञान उक्त शब्दों के सहारे अँगरेज़ी अनुवादों द्वारा भी सुगमता के साथ जाना जा सकता है।

किसी-किसी क़ुरान या उसके अनुवाद में आयतों की संख्या गणना के अनुसार कुछ भिन्न ठहरती है। ऐसी दशा में संभव है कि आयतों की जो संख्यायें ऊपर लिखी गई हैं वह एक या दो अधिक या कम हों।

———

प्रथम संस्करण ५००] [४-१०-१९४३

मौलवी आलिम फ़ाज़िल

महेशप्रसादजी की लिखी हुई कुछ पुस्तकें

(हिन्दी)

महर्षि दयानन्द सरस्वती	।।।)
महर्षि दयानन्द कहाँ और कब	।)
स्वामी दयानन्द और क़ुरान	।)
गाय और क़ुरान	-)
बक़र ईद	)।।
अमर सत्यार्थप्रकाश	)।
सत्यार्थ प्रकाश की व्यापकता	।)
विद्यामन्दिर	)
मनोरञ्जक हिसाब	।)
ज्ञान-गुदड़ी	।)
पुष्पाञ्जलि	।।)
मेरी ईरान-यात्रा	२)

(अँगरेज़ी)

The Immortal Satyarth Prakash

मिलने का पता—

मैनेजर—आलिमफ़ाज़िल बुकडिपो,
१२५ मुहतशिमगंज, इलाहाबाद (U. P.

प्रकाशक—आलिम फ़ाज़िल बुकडिपो १२५ मुहतशिमगंज इलाहाबाद
मुद्रक—श्री अपूर्वकृष्ण वसु इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस-ब्रांच

स्वामी दयानन्द और कुरान

अर्थात्

सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास पर विशेष वक्तव्य

"यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथा-तथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतोन्नति वालों के साथ भी वर्त्तता हूँ।"

—स्वामी दयानन्द सरस्वती (सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका)

लेखक

महेश प्रसाद मौलवी आलिम फ़ाज़िल

हिन्दू यूनीवर्सिटी, बनारस

गुरु विरजानन्द स्मारक पुस्तकालय

परिग्रहण क्रमांक 86729

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

प्रकाशक

आलिम फ़ाज़िल बुकडिपो

११५ मुट्ठीगंज इलाहाबाद।

सम्वत् २००० वि०

प्रथमबार] सन् १९४३ ई० [मूल्य ।)

स्व० श्री राजा जयकिशन दास सी० आई० ई०

जिनके

विशेष प्रोत्साहन से श्री स्वामी जी ने सत्यार्थ

प्रकाश बनाया और जिनके दान से यह

ग्रन्थ सर्वप्रथम प्रकाशित हुआ उन्हीं

की पुण्य स्मृति में यह ग्रन्थ

सादर समर्पित

भूमिका

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने अपने 'स्वीकार पत्र' लिखित फाल्गुन कृष्ण ५ मंगलवार संवत् १९३९ विक्रमी (२७ फरवरी सन् १८८३ ई०) के अनुसार 'श्रीमती परोपकारिणी सभा' की स्थापना की थी। अजमेर में इसी सभा का 'वैदिक पुस्तकालय' है। उसमें अनेक पुस्तकें ऐसी हैं जो श्री स्वामी दयानन्द जी के पास थीं अथवा यह कहना चाहिये कि उन की अपनी निजु थीं। मैं पहिले सन् १९१८ ई० में अजमेर गया। और दूसरी बार सन् १९३३ ई० में गया किन्तु दोनों बार पुस्तकालय से कुछ भी लाभ न उठा सका और यदि उठाता तो निस्सन्देह इतना न उठा सकता जितना कि तीसरी बार ३० मई सन् १९४३ ई० को वहां जाने से उठा सका हूँ।

मैंने *सत्यार्थ प्रकाश* के चौदहवें समुल्लास का अध्ययन पहिले ही बहुत कुछ किया था और इसके सम्बन्ध में कुछ न कुछ लिखा था किन्तु अजमेर में इस बार कुछ दिनों रहकर चौदहवें समुल्लास की बाबत विशेष रूप से कुछ ज्ञान प्राप्त किया। फलतः उसी का फल है कि यह उपयोगी पुस्तक पाठकों की सेवामें उपस्थित कर रहा हूँ। आशा है कि विचारशील पाठक इससे लाभ उठावेंगे।

आश्विन कृ० ७
सं० २००० वि०

महेश प्रसाद

विषय सूची

१—विद्वद्वर फ़ौजी और क़ुरान

२—तफ़सीर हुसैनी की दो टिप्पणियां

३—भ्रमनिवारण

४—क्योंकर लिखा गया

५—क्यों लिखा गया

६—कब लिखा गया

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक ....86729....
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

स्वामी दयानन्द और कुरान

चौदहवें समुल्लास पर वक्तव्य

संसार के समस्त मुसलमानों की दृष्टि में परम माननीय जो धर्म ग्रंथ है उसका नाम वास्तव में 'कुरआन' है, जिसको कि प्रायः कुरान कहा जाता है। वह लोग इसको ईश्वरीय वचन मानते हैं इस कारण इसको कलामुल्लाह भी कहा जाता है। परन्तु आदर व प्रतिष्ठा आदि के विचार से कुरान को 'कलाम मजीद' 'कुरान करीम' आदि भी कहा जाता है।

श्री स्वामी जी ने कुरान के विषय में चौदहवें समुल्लास में थोड़ा सा लिखा है और उक्त समुल्लास से सम्बन्ध रखने वाली अनुभूमिका में इस समुल्लास व कुरान के विषय में यह लिखा है—

"जो यह चवदहवां समुल्लास मुसलमानों के मत विषय में लिखा है तो केवल कुरान के अभिप्राय से; अन्य ग्रन्थ के मत से नहीं क्योंकि मुसलमान कुरान पर ही पूरा-पूरा विश्वास रखते हैं, यद्यपि फिरके होने के कारण किसी शब्द, अर्थ आदि विषय में विरुद्ध बात है तथापि कुरान पर सब एक मत्य है।"

समस्त मुसलमान कुरान को अपने मत का मूल पुस्तक मानते हैं अथवा यह कि कुरान पर सब एक मत हैं—इस विषय में कुछ

सन्देह नहीं, परन्तु साथ ही साथ अनपढ़ व पढ़े-लिखे मुसलमानों में कुरान के प्रति श्रद्धा-भक्ति है। उदाहरणार्थ जानना चाहिये कि मौलाना अबुल कलाम आज़ाद साहब यद्यपि बड़े देश व कांग्रेस भक्त हैं तथापि कुरान के प्रति भी उनकी भक्ति कुछ कम नहीं है। उर्दू के 'अल्-हिलाल' नामी सुप्रसिद्ध पत्र का सम्पादन मौलाना के कर-कमलों द्वारा होता था और बड़ी शान के साथ वह पत्र कलकत्ता से निकलता था। सन् १९१२ व १३ ई० में उक्त पत्र के जो अंक निकले हैं उनमें बहुत कुछ उनके द्वारा लिखा हुआ कुरान के विषय में मिलता है। उक्त पत्र के सब या थोड़े-बहुत अंक उर्दू के अनेक बड़े-बड़े पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं।

उक्त मौलाना महोदय ने ही सम्पूर्ण कुरान का उर्दू अब भाष्य तीन भागों में किया है जिनमें से दो भाग जून सन् १९४२ ई० के भीतर प्रकाशित रूप में मेरी दृष्टि में आये हैं। तीसरा भाग कब छापा जायेगा*—यह कहना कठिन है। हाँ, यह भी स्पष्ट रहे कि इस भाष्य के प्रथम भाग के एक खण्ड का हिन्दी अनुवाद 'कुरान और धार्मिक मतभेद' के नाम से सन् १९३३ ई० में प्रकाशित हो चुका है और उसमें देशरत्न श्रीयुत बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी की लिखी हुई भूमिका भी है।

अब सब से पहले यह जानना चाहिये कि सत्यार्थप्रकाश में जिस प्रकार क्रमानुसार बाइबिल पर लिखा गया है उसी प्रकार क्रमानुसार

---

* उर्दू भाष्य का नाम 'तर्जुमानुल कुरान' है। उर्दू के सुप्रसिद्ध विक्रेताओं के यहाँ बिकता है और उर्दू के अनेक बड़े-बड़े पुस्तकालयों में है—लेखक

कुरान पर भी लिखा गया है अर्थात् कुरान का पाठ जिस क्रम से है उसी क्रम को सन्मुख कर कुरान के विषय में लिखा गया है।

चौदहवें समुल्लास के पहले समीक्ष्य पदों के अन्त में संकेत के रूप में जो अक्षर हैं उनकी व्याख्या इस प्रकार है :—

मं० = मंज़िल।

सि० = सिपारा या पारा।

सू० = सूरत।

आ० = आयत।

मंज़िल, सिपारा आदि के विषय में जानना चाहिये कि :—

(१) मंज़िल शब्द अरबी भाषा का है। इसका अर्थ है—उतरने का स्थान; पड़ाव। जो लोग कुरान का पाठ सात दिनों में समाप्त करना चाहें उनके लिये एक चिन्ह रहे। इस कारण कुरान को सात मंज़िलों अर्थात् खण्डों में विभक्त किया गया है।

(२) पारा शब्द फ़ारसी का है। इसका अर्थ है—टुकड़ा; भाग। इसके निमित्त अरबी का शब्द 'जुज़' है। सिपारा शब्द फ़ारसी का है। मेरे विचार से यह शब्द सीपारा का बोधक है। सीपारा वास्तव में सी और पारा से बना हुआ है। सी का अर्थ है तीस और पारा का अर्थ भाग या टुकड़ा। पूरा कुरान तीस भागों में है। अतः तीस भागों के एक भाग को भी बहुतेरे लोग सिपारा कहते हैं और इससे पारा का अभिप्राय लेते हैं।

फ़ारसी वालों के कारण एक भाग को पारा कहा जाता है जहां कहीं (उदाहरणार्थ मिश्र में) अरबी बोली जाती है यदि वहां पर कुरान के सम्बन्ध में पारा या सिपारा शब्द जुज़ के

बदले में प्रयोग किया जाय तो कोई न समझेगा। जो लोग कुरान का पाठ ३० दिनों में समाप्त करना चाहें उनके लिये स्पष्ट रहे कि प्रति दिन कितना पढ़ना चाहिये। इस कारण पारा के विचार से सारा कुरान ३० भागों में विभक्त माना जाता है।

(३) सूरत या सूरः शब्द अरबी भाषा का है। जिस प्रकार मंज़िल और पारा के विचार से कुरान के खण्ड हैं उसी प्रकार सूरत के विचार से भी सम्पूर्ण कुरान विभक्त है। फलतः सूरत का अर्थ हुआ—कुरान का एक खण्ड। परन्तु सूरत का अर्थ श्रेष्ठता भी है।

मंज़िल व पारा के मुकाबिले में सूरत की महत्ता अधिक मानी जाती है। समस्त कुरान में कुल ११४ सूरतें (विभाग) हैं। परन्तु कोई-कोई सूरत किसी पारा से बड़ी है। उदाहरणार्थ ज्ञात रहे कि दूसरी सूरत अर्थात् सूरत बक़र के अन्तर्गत ढ़ाई पारे हैं। परन्तु कोई-कोई पारा ऐसा है कि उसमें बहुत सी सूरतें हैं जैसे कि अन्तिम अर्थात् तीसवां पारा है कि उसमें ३७ सूरतें हैं।

(४) आयत शब्द अरबी का है। अर्थ हैं—चिन्ह; वाक्य; अंश। कोई आयत छोटी होती है कोई कुछ बड़ी हुआ करती है। परन्तु प्रत्येक पारा या सूरत में अनेक आयतें हुआ करती हैं।

कुरान में सूरत का पद श्रेष्ठ माना जाता है इस कारण आयतों की गणना सूरत के विचार से हुआ करती है अर्थात् किसी आयत का परिचय देते हुये यह कहना अच्छा होता है कि अमुक सूरत की अमुक संख्या वाली आयत। कई आयतों के समूह से जो

खण्ड बनता है उसको रुकू कहते हैं*। यह अरबी शब्द है। इसका अर्थ है—झुकना। हां, ज्ञात रहे कि इसकी चर्चा चौहदवें समुल्लास में नहीं है किन्तु केवल जानकारी के लिये ही मैंने इसका उल्लेख कर दिया है।

कुरान में सूरत को महत्ता प्राप्त है। यही कारण है कि ११४ सूरतों में से नवीं सूरत तौबा को छोड़ कर बाकी ११३ सूरतों के पूर्व 'बिस्मिलाहिर्रहमानिर्रहीम' है। केवल ६२ सूरतों पर श्री स्वामी जी की ओर से समीक्षायें हैं।

विद्वद्वर फ़ैज़ी और कुरान

"क्या अकबर बादशाह के समय में मौलवी फैजी ने बिना नुक्ते का कुरान नहीं बना लिया था ?"

उक्त शब्द समीक्ष्य पद ८ से सम्बन्ध रखने वाले हैं। ज्ञात रहे कि विद्वद्वर फ़ैज़ी (स्वर्गीय सन् १५९५ ई०) अरबी व फारसी के बड़े विद्वान थे। सम्राट अकबर के नवरत्नों में से एक रत्न थे। इनके रचे अनेक ग्रंथ गद्य व पद्य में हैं। उन्हीं में से 'सवातिउल्इल्हाम्' (سواطع الالهام) नामी अपूर्व ग्रन्थ भी है। कुरान का यह एक अपूर्व भाष्य अरबी में है। इसी की ओर उक्त शब्दों में संकेत है।

अरबी वर्णमाला में कुल २८ अक्षर होते हैं। उनमें से १५ नुक्ते (बिन्दी) वाले और १३ बिना बिन्दी वाले हैं। कुरान में जो

---

* प्रत्येक पारा में अनेक रुकू हैं। परन्तु सूरत 'अबस' अर्थात् सूरत संख्या ८० से लेकर अन्त तक की ३५ सूरतें ऐसी हैं जिनमें से प्रत्येक सूरत केवल एक ही रुकू की है—लेखक।

शब्द हैं वे बिना बिन्दी वाले व बिन्दी वाले दोनों प्रकार के अक्षरों से बने हैं किन्तु विद्वद्वर फ़ैज़ी ने समस्त कुरान का भाष्य ऐसे शब्दों द्वारा किया है जो सब के सब बिना बिन्दी वाले हैं अर्थात् अरबी के केवल १३ अक्षरों से ही बने हैं। इस अमूल्य भाष्य की हस्त-लिखित प्रतियां संसार के अनेक पुस्तकालयों में हैं किन्तु इसका प्रकाशन नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से सन् १८६६ ई० (सन् १३०६ हिजरी) में हो चुका है। इस संस्करण में कुल पृष्ठ (बड़े आकार के) ८०० से कुछ कम हैं। मूल भाष्य ७०६ पृष्ठों में है। बाकी पृष्ठों में अनेक शब्दों की व्याख्या है और अनेक लोगों के प्रशंसापूर्ण कथन हैं। सम्भव है कि उक्त अमूल्य ग्रन्थ का कोई संस्करण किसी अन्य प्रेस में भी छपा हो किन्तु उक्त संस्करण के सिवा कोई अन्य संस्करण किसी अन्य प्रेस का छपा हुआ मेरी दृष्टि में नहीं आया।

तफ़सीर हुसैनी की दो टिप्पणियां

मुल्ला हुसैन वाइज़ काशफ़ी स्वर्गीय ६१० हिजरी (सन् १५०५ ई०) अरबी व फ़ारसी के एक अद्वितीय विद्वान् थे। अनेक पुस्तकें इनके द्वारा रची गई हैं। फ़ारसी में 'अख़लाक़ मुहसनी' व 'अख़लाक़ मुहसनी' इन की ऐसी पुस्तकें हैं जिनका चलन भारत तथा अन्य देशों में कुछ कम नहीं। इन्हीं का रचा हुआ 'तफ़सीर हुसैनी' नामक ग्रन्थ कुरान का एक अपूर्व भाष्य फ़ारसी में है। इस भाष्य को 'मवाहिब अलीयः' भी कहा जाता है। मुल्ला साहब ने कई वर्षों के लगातार परिश्रम के पश्चात इस अपूर्व ग्रन्थ को समाप्त किया था। इसकी हस्त लिखित प्रतियां संसार के

अनेक पुस्तकालयों में हैं किन्तु इसके छपे हुये रूप जो मेरी दृष्टि में आये हैं उन में से दो यह हैं। इन दोनों संस्करणों से में प्रत्येक संस्करण दो भागों में विभक्त है।

(१) नवल किशोर प्रेस लखनऊ में पहिला भाग जनवरी सन् १८७४ ई० (ज़िल् हिज्जा मास सन् १२९० हिजरी) में दूसरी बार का छपा हुआ।

उक्त प्रेस से ही दूसरा भाग मार्च सन् १८७४ ई० (मुहर्रम मास सन् १२९१ हिजरी) में दूसरी बार का छपा हुआ।

(२) अहमदी प्रेस कानपूर में अप्रैल सन् १८९५ ई० (शौवाल सन् १३१२ हिजरी) का छपा हुआ पहिला भाग।

उक्त प्रेस से ही दूसरा भाग नवम्बर १८९५ ई० (जमादी औवल सन् १३१३ हिजरी) का छपा हुआ।

उक्त दोनों संस्करणों में समीक्ष्यपद ३९ व १३७ से सम्बन्ध रखने वाली पाद टिप्पणियां जिन पृष्ठों में हैं उन का विवरण नीचे दिया जाता है ताकि मूल फारसी भाष्य अर्थात् 'तफसीर हुसैनी' में लोग उन टिप्पणियों की बातों को भली भांति देख सकें। फलतः ३९ के निमित्त देखना चाहिये:—

(१) लखनऊ के संस्करण सन् १८७४ ई० के पहिले भाग का पृष्ठ ४४ व ४५।

(२) कानपूर के संस्करण सन् १३१२ हिजरी (सन् १८९५ ई०) के प्रथम भाग का पृष्ठ ४१।

समीक्ष्यपद १३७ से सम्बन्ध रखने वाली पाद-टिप्पणी के निमित्त देखना चाहिये :—

(१) लखनऊ के संस्करण सन् १८५४ ई० के दूसरे भाग का पृ० २६६।

(२) कानपूर के संस्करण सन् १३१३ हिजरी के दूसरे भाग का पृ० ६४७।

उक्त प्रेसों के अन्य सनों के संस्करणों में भी संभव है कि उन्हीं पृष्ठों में ३६ व १३७ से सम्बन्ध रखनेवाली बातें हों जिन पृष्ठों में ऊपर के संस्करणों में बताई गई हैं अन्यथा दो-एक आगे पीछे के पृष्ठों में हो सकती हैं।

'तफसीर हुसैनी' के अच्छे होने का परिचय इस बात से भी मिलता है कि मूल फारसी का अनुवाद उर्दू में हो गया है और उस के दस संस्करण अक्तूबर सन् १६२८ ई० तक निकल छप चुके हैं। उर्दू का पहिला संस्करण कब निकला था—इस बात को मैं नहीं जान सका किन्तु यह अवश्य जान सका हूँ कि उर्दू अनुवाद का दूसरा संस्करण सन् १८८३ ई० में निकला था और वह पंजाब पबलिक लायब्रेरी लाहोर में अवश्य है।

उर्दू अनुवाद 'तफसीर कादरी' के नाम से नवल किशोर प्रेस लखनऊ का ही भिन्न २ समयों का छपा हुआ मेरी दृष्टि में आया है। उर्दू अनुवादक का नाम मोलवी फखर उद्दीन अहमद कादरी है। उक्त उर्दू अनुवाद का कोई न कोई संस्करण भारत के अनेक बड़े नगरों के बड़े भारी २ पुस्तकालयों में मैं ने स्वयं देखा है।

ज्ञात रहे कि 'तफसीर कादिरी' आवृत्ति पंचम प्रकाशित सन् १८६० ई० व आवृत्ति दशम प्रकाशित सन् १६२८ ई० के प्रथम भाग के पृष्ठ ७० व ७१ में समीक्षा ३६ से सम्बन्ध रखने वाली पाद-

टिप्पणी की बातें हैं और पाद-टिप्पणी में जिस मनुष्य के विषय में उल्लेख है कि वह हज़रत मुहम्मद साहब के पास आया उसका नाम उक्त उर्दू या फ़ारसी भाष्यों में अबुद्दहदाह अनसारी लिखा हुआ मिलता है।

समीक्षा १३७ की पाद-टिप्पणी से सम्बन्ध रखने वाली बातें उक्त उर्दू भाष्य की दोनों आवृतियों के दूसरे भाग के पृष्ठ ३६८ में मिलती हैं।

श्री स्वामी जी महाराज ने संवत् १९२० वि० (सन् १८६३ ई०) में प्रचार कार्य आरम्भ किया था। उन्होंने पहले जो कुछ कहा या लिखा था वह सब का सब हिन्दू-धर्म के निमित्त था।

भ्रमनिवारण

श्री स्वामी जी के जीवन चरित्रों से ऐसा पता चलता है कि जून सन् १८६६ ई० (ज्येष्ठ अधिक संवत् १९२३ वि०) में अजमेर में श्री स्वामी जी की बातचीत धर्म विषय पर एक मौलवी साहब से हुई थी। इस समय से पूर्व किसी मुसलमान (मौलवी) से श्री स्वामी जी की बातचीत धर्म विषय पर थी या नहीं—निश्चय रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। संभवतः यही पहिला अवसर है जब कि किसी मुसलमान सज्जन से धर्म सम्बन्धी बातें हुई थीं।* इस समय के पश्चात् श्री स्वामी जी के अनेक शास्त्रार्थ मुसलमानों के साथ हुये हैं और अनेक अवसरों पर उन्होंने

*ईसाइयों के साथ भी पहले पहल संभवतः अजमेर में ही धर्म-विषयक बातें इसी अवसर पर हुई थीं—लेखक

मुसलमानों के विषय में व्याख्यान दिये हैं। यहां तक कि हिन्दी में कुरान तैयार कराया और चौदहवाँ समुल्लास लिखा है।

सत्यार्थ प्रकाश का जो संस्करण सन् १८७५ ई० में प्रकाशित हुआ था उसमें केवल १२ समुल्लास थे। ईसाइयों से सम्बन्ध रखने वाला तेरहवां और मुसलमानों वाला चौदहवाँ अर्थात् अन्त के दो समुल्लास उसमें जल्दी के कारण न छप सके थे।

सन् १८८४ ई० में सत्यार्थ प्रकाश का जो संस्करण निकला है उसमें ही सबसे पहले उक्त दोनों समुल्लास सम्मिलत हुये हैं। ऐसा होने से ईसाई तो कम या बिलकुल नहीं किन्तु मुसलमान लोग ईसाइयों के भी आनरेरी वकील बनकर कभी-कभी इस प्रकार का भ्रम फैलाया करते हैं—श्री स्वामी जी ने उक्त दोनों समुल्लासों को नहीं लिखा था। बल्कि अन्य किसी ने उक्त दोनों समुल्लासों को लिखा है और उनको सत्यार्थ प्रकाश में लगा दिया है और यही कारण है कि सन् १८८४ ई० में, उनकी मृत्यु के पश्चात् सत्यार्थ प्रकाश छपा है—इत्यादि

इस प्रकार के भ्रम के निवारणार्थ जानना चाहिये कि सन् १८७५ ई० के संस्करण के दसवें समुल्लास के अन्तिम अंश में जो कुछ लिखा हुआ मिलता है उससे स्पष्ट है कि उन्होंने अन्त के चार समुल्लासों के लिखने का निश्चय किया था *। किन्तु लिखित रूप में केवल दो ही समुल्लास सन् १८७५ ई० के

---

*इस निश्चय का उल्लेख उन संस्करणों के दसवें समुल्लास के अन्तिम भाग में भी मिलता है जो कि सन् १८८४ ई० के संस्करण के आधार पर हैं—लेखक

संस्करण में स्थान पा सके थे। बाकी दो समुल्लास तेरहवें व चौदहवें उक्त संस्करण में न शामिल हो सके थे*। कारण यह कि उस संस्करण के प्रकाशन में बहुत जल्दी की गई थी।

ईसाई व मुसलमानों से सम्बन्ध रखने वाले समुल्लास वास्तव में सन् १८७५ ई० के संस्करण के निमित्त लिखे गये थे—इस बात की पुष्टि एक पत्र† से इस प्रकार होती है :—

"सत्यार्थ प्रकाश कितने अध्याय तक छपा ? जितना छपा हो तितना राजा जय किशन दास के पास भेज दो। जल्दी छापो। यहां बहुत से लोग लेने को कहते हैं। इसके बिना बहुत हरकूकत है और शिक्षा की पुस्तक छपी कि नहीं। आगे शुभ हो।

संबत १९३१ मिती माघ बदी २ शनिवार अर्थात् २३ जनवरी सन् १८७५ ई० आगे मुरादाबाद में कुरान के खण्डन का अध्याय शोधन के वास्ते गया रहा सो शोध के आप के पास आया कि नहीं। जो न आया हो तो राजा जय किशन दास जी को खत लिखो जल्दी छापने के वास्ते भेज देवें और बाइबिल का अध्याय सब शोध कर के छाप दो। दो महीने में छापने के वास्ते जो आप ने लिखा सो

---

*इस बात की पुष्टि संस्करण सन् १८८४ ई० अथवा उसके आधार पर छपे हुए समस्त संस्करणों की भूमिका से भी होती है—लेखक।

†यह पत्र मुंशी हरिवंश लाल जी के नाम अहमदाबाद से बनारस भेजा गया था जिन के अधिकार से स्टार प्रेस बनारस में १८७५ ई० का संस्करण छपा था। अब यह प्रेस जीवित नहीं है—लेखक।

दो महीने में सब पुस्तक छांप दो शुद्ध करके अशुद्ध न होने पाये"।❀

फलतः सन् १८७४ ई० के अन्तिम दिनों अथवा जनवरी सन् १८७५ ई० के आरम्भ में ही श्री स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तेरहवें व चौदहवें समुल्लासों अथवा केवल चौदहवें को लिखा होगा। परन्तु इन दोनों के छपने की नौबत सन् १८७५ ई० के संस्करण में न आई थी और दोनों समुल्लास सन् १८८४ ई० में छप सके थे।

श्री स्वामी जी ने दोनों समुल्लासों में बाइबिल व कुरान के विषय में वस्तुतः थोड़ा ही थोड़ा लिखा है जैसा कि तेरहवें व चौदहवें समुल्लासों के अन्तिम शब्दों से स्पष्ट है। अब जानना चाहिये कि श्री स्वामी जी ने प्रोटेस्टेन्ट ईसाइयों की बाइबिल की बात ही लिखा है और उनकी पूरी बाइबिल हिन्दी में उस समय पर्याप्त थी। हिन्दी जानने वालों के लिये अवसर प्राप्त था कि बाइबिल के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकें। परन्तु हिन्दी जानने वालों के लिये हिन्दी में कोई कुरान न था। इसी कारण उन्होंने कुरान को हिन्दी में छपाने का विचार किया था क्योंकि 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' द्वितीय भाग प्रकाशित सन् १९१९ ई० में दीनापुर (दानापुर) के बाबू माधोलाल जी के नाम

❀श्री पंडित लेखराम जी द्वारा संगृहीत सामग्री के आधार पर 'महर्षि दयानन्द— उर्दू" नाम का जीवन चरित्र जो सन् १८९७ ई० में तैयार हो कर आर्य प्रतिनिधि सभा लाहोर द्वारा प्रकाशित— पृ० २३४।

का एक पत्र* जो २४ अप्रैल सन् १८७६ ई० का लिखा हुआ श्री स्वामी जी की ओर से अँग्रेजी में है उसके यह शब्द हैं—

The "Koran" in Nagri is entirely ready but has not been printed yet.

(कुरान नागरी में पूरा तैयार है परन्तु अभी तक छापा नहीं गया।)

श्री स्वामी जी ने चादहवें समुल्लास से सम्बन्ध रखने वाली अनुभूमिका में जो कुछ लिखा है उससे इस बात पर प्रकाश पड़ता है कि हिन्दी में कुरान क्योंकर उन्होंने तैयार कराया था—

"जो कुरान अरबी भाषा में है उस पर मौलवियों ने उर्दू में अर्थ लिखा है उस अर्थ का देवनागरी अक्षर और आर्य भाषान्तर करा के पश्चात् अरबी के बड़े-बड़े विद्वान से शुद्ध करवा के लिखा गया है।"

हिन्दी में कुरान की तैयारी का श्री गणेश कब हुआ था—इस बात को अभी तक मैं नहीं जान सका। हाँ, इस बात को अवश्य बहुत कुछ जान सका हूँ कि यह कार्य कब पूरा हुआ था। क्योंकि श्री स्वामी जी द्वारा तैयार कराई हुई हिन्दी कुरान की वह प्रति मेरी दृष्टि में आई है जो कि पुस्तक रूप में ठीक ठीक अच्छे ढङ्ग पर लिखी हुई है और उसके अन्त में उसके लिखे अर्थात् साफ-साफ नकल किये जाने का समय कार्तिक शुक्ल ६ संवत् १९३५ वि० (३ नवम्बर सन् १८७८ ई०) अंकित है। यह प्रति

*इस पत्र तथा अन्य १७ पत्रों की असली प्रतियां दीनापुर में हैं। मैं ने २० जून सन् १८४३ ई० को उक्त सब पत्रों को स्वयं देखा है। श्री पण्डित भगवददत्त जी द्वारा सम्पादित 'ऋषि दयानन्द के पत्र व विज्ञापन' के दूसरे भाग का पृष्ठ १७ देखना चाहिये—लेखक।

अजमेर में परोपकारिणी सभा के वैदिक पुस्तकालय में मौजूद है। ११ × ७½ इंच आकार के ७२५ पृष्ठों की है। पहले ७२२ पृष्ठों में मूल कुरान का अनुवाद है। पृष्ठों के किनारों पर कुछ शब्दों का अर्थ है और कहीं-कहीं कुछ और टिप्पणियाँ भी हैं। किन्तु पृष्ठ ७२३ व ७२४ में केवल मूल कुरान का अनुवाद है अर्थात् इन पृष्ठों के किनारों पर भी मूल कुरान का अनुवाद ही है और पृ० ७२५ के किनारों पर शब्दार्थ आदि कुछ नहीं है, क्योंकि मूल कुरान के अन्तिम भाग के ही थोड़े से अंश का अनुवाद है।

श्री बाबू माधोलाल जी के नाम के पत्र के जो शब्द ऊपर दिये गये हैं उनसे वस्तुतः ऊपर वर्णित (हिन्दी कुरान की) प्रति से अभिप्राय है और इसमें सन्देह नहीं कि अब (सन् १९४३ ई०) तक हिन्दी में कई कुरान छप चुके हैं परन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि श्री स्वामी जी महाराज ही पहिले व्यक्ति हैं जिनके उद्योग से सब से पहिले हिन्दी में कुरान हुआ है और यदि उसके छपने की नौबत उन के जीवन काल या बाद में भी आगई होती तो सोने में सुगन्धि हो जाती। वास्तव में श्री स्वामी जी की यह बात कुछ कम मारके की नहीं कि उन्होंने हिन्दी वालों के लिये यह उद्योग किया था कि वह जान सकें कि कुरान में क्या है जिस पर सारे मुसलमान एकमत हैं और पढ़े-लिखे व अनपढ़ जिसके सभी बड़े भक्त हैं।

अब अन्त में यह कहना उचित प्रतीत होता है कि सत्यार्थ प्रकाश के संस्करण १८७५ ई० के निमित्त जो सामग्री चौदहवें समुल्लास की थी वह उक्त संस्करण में शामिल न हो सकी और उसी

सामग्री को उक्त हिन्दी कुरान की सामग्री के आधारपर रखा गया। निदान सन् १८८४ ई० के संस्करण में चौदहवें समुल्लास की इति श्री कुरान के उक्त हिन्दी प्रति की सामग्री के आधार पर ही अवश्य हुई है। क्योंकि चौदहवें समुल्लास में आयतों की संख्या और समीक्ष्य पदों के भाव आदि उक्त प्रति से ही बहुत कुछ मिलते जुलते हैं।

अब इसी अवसर पर थोड़ा सा यह भी जानना चाहिये कि तेरहवाँ समुल्लास मिशन प्रेस इलाहाबाद द्वारा इन प्रकाशित ग्रन्थों के आधार पर है :—

पुराना नियम (Old Testament)—प्रथमभाग (इसमें 'उत्पत्ति' से लेकर 'राजाओं की दूसरी पुस्तक' तक है) प्रकाशित सन् १८६६ ई० और दूसरा भाग (इसमें 'काल के समाचार की पहली पुस्तक' से लेकर 'मलाकी भविष्यद्वक्ता की पुस्तक' तक है) प्रकाशित सन् १८६६ ई०।

नया नियम (New Testament)—प्रकाशित सन् १८७४ ई०

ऐसी दशा में ठीक बात यह है कि सन् १८७५ ई० के संस्करण के लिये यह समुल्लास जैसा तैयार हुआ वैसा ही सन् १८८४ ई० के संस्करण के लिये भी रहा। यदि कुछ संशोधन भी हुआ होगा तो बहुत ही कम।

श्री स्वामी जी महाराज ने जिस समय हिन्दी में कुरान का अनुवाद कराया था उस समय तक वस्तुतः दो ही उर्दू अनुवाद पूरे-

क्योंकर लिखा गया

पूरे थे। दोनों अनुवादों के अनुवादक दिल्ली के सुप्रसिद्ध विद्वान शाह वली उल्ला❀ साहब के दो बेटे थे :—

❀मौलाना शाह वली उल्ला साहब पहिले भारतीय मुसलमान हैं जिन्होंने कुरान का अनुवाद फारसी में किया था—लेखक।

(१) मौलाना शाह रफ़ीउद्दीन साहब—यह सन् ११६३ हिजरी (सन् १७४६ में या १७५० ई०) में पैदा हुये थे। इनका देहान्त सन् १८१८ ई० में हुआ था। यह शाह वली उल्ला साहब के द्वितीय पुत्र थे।

(२) मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर साहब—यह सन् ११६७ हिजरी (सन् १७५३ या १७५४ ई०) में पैदा हुये थे अर्थात मौलाना शाह रफ़ी उद्दीन साहब के छोटे भाई थे। इनके देहान्त का समय कहीं ६ रजब सन् १२४३ हिजरी (सन् १८२८ ई०) और कहीं १२३० हिजरी लिखा हुआ मिलता है।

इन दोनों भाइयों में से किसने पहले उर्दू में अनुवाद किया—इस बात की बाबत ठीक २ कुछ नहीं कहा जा सकता। परन्तु यह स्पष्ट रहे कि दोनों अनुवाद यद्यपि काफ़ी पुराने हो चुके हैं और इनके पश्चात अब सन् १९४३ ई० तक अनेक अनुवाद उर्दू में हो चुके हैं तथापि दोनों का चलन अब भी बहुत ज्यादा है।

दोनों अनुवादकों के अनुवादों के संस्करण किसी न किसी प्रकाशक द्वारा प्रकाशित प्रत्येक बड़े नगर में मिल जाते हैं इस कारण किसी विशेष संस्करण से अर्थों का मुकाबिला चौदहवें समुल्लास के समीक्ष्य पदों के साथ भली भाँति किया जा सकता है और यह बात जानी जा सकती है कि चौदहवें समुल्लास के समीक्ष्य पदों में जो शब्द तथा भाव हैं वे मौलाना शाह रफ़ी उद्दीन साहब के अनुवाद से बहुत कुछ मिलते हैं और समीक्ष्य पदों के शब्दों की आधार शिला हिन्दी कुरान के शब्दों पर है। निदान

शब्दों को बहुत कुछ मौलाना शाह रफ़ीउद्दीन साहब के अनुवाद पर निर्भर समझना चाहिये। परन्तु साथ ही साथ यह भी जान लेना चाहिये कि मौलवी शाह अब्दुल कादिर साहब के अनुवाद से भी कुछ सहायता हिन्दी कुरान के निमित्त अवश्य ली गई है क्योंकि समीक्ष्य पदों के शब्द पूर्ण रूप से मौलाना शाह रफ़ी उद्दीन साहब के शब्दों तथा भावों से नहीं मिलते बल्कि कहीं २ भिन्नता है और यह भिन्नता वास्तव में मौलाना शाह अब्दुल कादिर साहब के अनुवाद की बदौलत पैदा हुई है।

हाँ, एक और ग्रन्थ 'तफ़सीर हुसैनी' नाम का है जिस से चौदहवें समुल्लास के निमित्त अवश्य सहायता ली गई है क्योंकि समीक्ष्य पद ३६ व १३७ से सम्बन्ध रखने वाली दो पाद-टिप्पणियां उक्त ग्रन्थ के ही आधार पर हैं। कुरान का मूल पाठ या उसके किसी अनुवाद को बिना किसी टीका या भाष्य के पूरा २ समझना सर्वथा असंभव है। फलतः 'तफ़सीर हुसैनी' नामक भाष्य से कुछ सहायता अवश्य ली गई है। उदाहरणार्थ जानना चाहिये कि समीक्ष्य-पद १०२ के अन्तिम भाग में जो कुछ है और उसके विषय में जो कुछ समीक्षा है वह वास्तव में 'तफ़सीर हुसैनी' पर ही निर्भर है:—

(अ) और बहुत मारे .....नूह के। (समीक्ष्य पद)

(आ) जो खुदा ही ने.....नहीं हो सकता। (समीक्षक)

उक्त समीक्ष्य पद के सिवा कुछ अन्य स्थलों में भी उक्त भाष्य से ही सम्बन्ध रखने वाली बातें हैं। उक्त भाष्य के विषय में विस्तार

पूर्वक पहिले ही लिखा जा चुका है जहां पर इस भाष्य से सम्बन्ध रखने वाली दो टिप्पणियों का उल्लेख किया गया है।

क्यों लिखा गया

यदि कोई व्यक्ति किसी बात के सम्बन्ध में अपने सन्मुख दो बातों को रखे—'क्या' और 'क्यों'? ऐसी दशा में वह उस बात के रहस्य को भलीभाँति जान सकेगा। उक्त दोनों बातों को सम्मुख रख कर मैं सत्यार्थ-प्रकाश के चौदहवें समुल्लास की बाबत पाठकों को कुछ बतलाना चाहता हूँ।

चौदहवें समुल्लास में क्या है? इस बात के जतलाने की तो आवश्यकता नहीं। इस कारण केवल यह बतलाना है कि क्यों इस समुल्लास के लिखने की आवश्यकता पड़ी। कौन नहीं जानता कि श्री स्वामी जी ने सन् १८६३ ई० में अपना कार्य आरम्भ किया था। मुसलमानों का पतन राष्ट्रीय दृष्टि से उस समय से कुछ पहले ही हो चुका था, किन्तु धार्मिक दृष्टि से उनमें जागृति हो गई थी। इसी बात का फल था कि अनेक मुसलमानों ने सन् १८३० ई० में सिक्खों के साथ धर्म युद्ध किया था और सन् १८५७ ई० में भी अंगरेजों से लड़ना अपना कर्तव्य समझा था। निदान धार्मिक भावों का ही फल कहना चाहिये कि कुछ लोगों ने हिन्दुओं के विरुद्ध पुस्तकें लिखीं। उक्त विषय से सम्बन्ध रखने वाली जिन पुस्तकों को मैं अब तक जान सका हूँ उनमें से सबसे पुरानी 'रद हिन्दू' नामक पुस्तक है जिस पर लेखक का नाम मौलवी 'मुहम्मद इस्माइल कोकनी रतनागीरी' छपा है। उक्त पुस्तक बम्बई में सन १२६१ हिजरी (अर्थात् सन् १८४५ ई०) में मुहम्मद इद्रीस बिन अब्दुल्ला चलमाई द्वारा पहिले पहिल छपवाई गई है। इसके

उक्त संस्करण को मैंने स्वयं देखा है और इस पुस्तक के उस संस्करण को भी देखा है जो सन् हिजरी १२६७ के ज़िलहिज्ज मास अर्थात् अक्तूबर या नवम्बर सन् १८५० ई० में कानपुर से प्रकाशित हुआ। उक्त संस्करणों के सिवा इस पुस्तक के कई अन्य संस्करण भी निकले हैं। श्री स्वामी दयानन्द जी के कई जीवन चरित्रों में 'रद्द हिन्दू' के बदले पुस्तक का नाम 'रद्दे हनूद' अशुद्ध लिखा हुआ है।

भारत के अनेक पुस्तकालयों में 'रद्द हिन्दू' का कोई न कोई संस्करण है। उस पुस्तक में जो कुछ लिखा हुआ है वह सब प्रश्न उत्तर के रूप में (उर्दू में) है। इसके उत्तर में 'रद्द मुसलमान' के नाम से एक पुस्तक श्री चौबे बद्रीदास जी की ओर से अवश्य निकली थी। यह मेरी दृष्टि में आई थी। और इसका उल्लेख कुछ ग्रन्थों में मिलता है।

उक्त दोनों पुस्तकों के सिवा बाद को जिन पुस्तकों के लिखे जाने का पता चलता है उनका विवरण संक्षेप में इस प्रकार है:—

'तुहफ़तुलहिन्द' के नाम से १२६८ हिजरी (सन १८५१ या १८५२ ई०) में एक पुस्तक एक ऐसे व्यक्ति की लिखी हुई प्रकाशित हुई जो कि हिन्दू थे किन्तु बाद को १२६४-हिजरी (सन् १८४८ ई०) में मुसलमान हो गये थे। इनका पहिला नाम अनन्त राम था। उक्त पुस्तक तो उर्दू में थी किन्तु उसके उत्तर में मुरादाबाद के मुंशी इन्द्रमणि जी की ओर से फ़ारसी में 'तुहफ़तुल इस्लाम' नाम की पुस्तक प्रकाशित हुई। इसके उत्तर में मौलवी सैय्यद महमूद हुसेन साहब ने 'ज़िलअतुल हनूद' नाम की पुस्तक फ़ारसी में सन

१२८१ हिजरी (सन १८६४ या १८६५ ई० में) प्रकाशित कराई। इसके उत्तर में मुंशी इन्द्रमणि जी की ओर से 'पादाश इस्लाम' नाम की पुस्तक सन १८६६ ई० में (फ़ारसी में) प्रकाशित हुई।

बरेली के किसी मुसलमान सज्जन की ओर से 'मस्नवी ओसूल दीन हिन्दू' के नाम की पुस्तक (पद्य में) प्रकाशित हुई।* तो इसका उत्तर मुन्शी जी ने 'मस्नवी दीन अहमद' नामी पुस्तक में (पद्य में) सन् १८६६ ई० में दिया। इसके पश्चात् मौलाना मुहम्मद हुसैन उपनाम 'फ़कीर' साहब की पुस्तक 'तेग़ फ़कीर बर गरदन शरीर' के रचे जाने का पता लगता है। वह पुस्तक संभवतः १८७३ में प्रकाशित हुई थी। फिर जब मुरादाबाद के एक मुसलमान मौलवी अहमद दीन ने 'एजाज़ मुहम्मदी' और दूसरे सज्जन मौलवी कुतुब आलम ने 'हद्यतुल असनाम' नाम की पुस्तकें लिखीं तो मुन्शी इन्द्रमणि जी की ओर से सम्बत् १९२२ वि० सन् १८६५ ई० में 'हमला हिन्द' और 'समसामहिन्द' नाम की पुस्तकें निकलीं और सन १८६८ ई० में 'सौलत हिन्द' नाम की पुस्तक प्रकाशित हुई।

'तुहफ़तुल हिन्द' नाम की पुस्तक का वह संस्करण मेरी दृष्टि में आया है जो कि मेरठ के हाशमी प्रेस से तीसरी बार मुहर्रम सन् १२७७ हिजरी (सन् १८६० ई०) में प्रकाशित हुआ है। इसके लेखक जो मुसलमान हो गये थे उनका नाम मौलवी ओबैदउल्ला लिखा हुआ है। इसमें उन अनेक हिन्दुओं का भी नाम लिखा हुआ मिला है जो कि मुसलमान हो गये थे।

---

* इस पुस्तक के प्रकाशित होने का समय नहीं मालूम हो सका—लेखक

हाँ, यह भी ध्यान में रहे कि सन् १८७५ ई० से कुछ पहले तथा बाद में ईसाइयों की ओर से मुसलमानों के विषय में जो कुछ लिखा गया है अथवा कहा गया है संभवतः उस से भी मुसलमानों में कुछ अधिक जागृति धर्म के निमित्त हुई। फलतः श्री स्वामी जी के कार्य काल (आरंभ सन् १८६३ ई०) में अथवा इस से कुछ पूर्व काल में। धर्म के नाम पर भारत में बड़ा द्वन्द्व मचा था जैसा कि History of the Sects of Maharajas Or Vallabhacharyas in Western India* तथा इस प्रकार के कुछ अन्य ग्रन्थों से बहुत कुछ जाना जा सकता है।

श्री स्वामी जी महाराज धर्म के उपासक थे। वह सत्य के पुजारी थे। उनके कार्य-काल में आने-जाने के निमित्त वह साधन न थे, जो कि अब सन १९४३ ई० में या अब से कुछ ही पहिले रहे हैं। चाहे कुछ हो साफ़-साफ़ बात यह है कि प्रत्येक स्थान में वह स्वयं न पहुँच सकते थे और जहाँ कहीं वह पहुंचे थे वहाँ का प्रत्येक व्यक्ति उनके व्याख्यानों, शास्त्रार्थों आदि से लाभ न उठा सका था। सन १८६३ ई० से लगभग दस वर्षों तक उन्होंने अधिकांश कार्य

---

*इस पुस्तक में कुछ अन्य सम्प्रदायों का भी उल्लेख है। इस में लेखक का नाम नहीं लिखा हुआ है। यह अंग्रेज़ी में है और Trubner & Co. London द्वारा सन् १८६५ ई० में सचित्र प्रकाशित हुई है। किसी को यदि किसी बड़े पुस्तकालय में देखने के लिये न मिले तो उसे हिन्दू विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में मिल सकती है— लेखक।

मौखिक ही किया था और इससे उनकी धूम मच गई थी। इस प्रकार की बात या बातों से आवश्यक हुआ था कि वह अपने विचारों को पुस्तक रूप में मुद्रित कराते ताकि अनेक लोगों को लाभ होता। ऐसी दशार्थ में सत्यार्थ प्रकाश लिखा गया जिसमें पहले उन बातों का उल्लेख है जिनका जानना व करना उत्तम है और बाद को उन बातों की चर्चा है जो उनके विचार से असत्य या अधर्म-युक्त हैं ताकि लोग उस प्रकार की बातों से दूर रहें अथवा यह कि अपने से उन असत्य या अधर्मयुक्त बातों को दूर करें। फलतः सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका से ही इस बात की भली भांति पुष्टि हो जाती है।

सत्यार्थ प्रकाश की रचना व उसके प्रकाशन के विषय में विशेष हाल जिस का रहा है उस के विषय में जानना चाहिये कि मुरादाबाद (संयुक्तप्रान्त) के चौबे ब्राह्मण कुलभूषण श्री राजा जय-किशन दास जी सन् १८३२ ई० में पैदा हुये और सन् १९०५ ई० में स्वर्ग लोक सिधारे थे। सन् १८६० ई० में अपनी प्रशंसनीय सेवाओं के कारण अंग्रेजी राज्य की ओर से राजा की पदवी से विभूषित किये गये थे और खिलअत व जागीर भी उनको दी गई थी। सन् १८७० ई० में सी. एस. आई. अर्थात् कम्पेनियन आफ दी स्टार आफ इण्डिया की उपाधि उन को सरकार की ओर से मिली थी। वह इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के फेलो भी थे। कई वर्ष तक डिप्टी कलक्टर के पद पर भी उन्हों ने कार्य किया था। परन्तु ज्ञात रहे कि अब बीसवीं शताब्दी में अनेक भारतीय डिप्टी कलेक्टरी से कहीं उच्च पद पर विराज रहे हैं और उस काल

में तो विरले ही भारतीय डिप्टी कलक्टर हुये थे। श्री राजा महोदय सब से पहिले श्री स्वामी जी से दिसम्बर सन् १८७३ ई० में मिले थे और इस समय के पश्चात इन्हीं की प्रेरणा से सत्यार्थ प्रकाश रचा गया था जो सन् १८७५ ई० में बनारस के स्टार प्रेस में छपा था। इस छपे हुये सत्यार्थ प्रकाश के प्रधान अर्थात प्रारंभिक व प्रारंभिक पृष्ठ के पश्चात वाले पृष्ठ से विदित होता है कि यह संस्करण श्री राजा महोदय की आज्ञा व उनके दाम से छपा था। अतः सत्यार्थ प्रकाश की रचना व प्रकाशन के मूल कारण श्री राजा महोदय ऐसे व्यक्ति थे।

श्री सर सैयद अहमद खां बहादुर का जीवन चरित्र उर्दू में 'हयात जावेद' नाम से मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली जी द्वारा रचित है। इससे प्रतीत होता है कि सर सैयद जी के एक बड़े मित्र राजा जी भी थे। उक्त ग्रन्थ का जो संस्करण सन् १९३९ ई० में अंजुमन तरक्की उर्दू के कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित है उसके दूसरे भाग के पृष्ठ ४४३* से स्पष्ट है कि सर सैयद महोदय के सुपुत्र श्री सैयद महमूद जी श्री राजा जी को 'चचा' और इनके सुपुत्र श्री रास मसऊद जी श्री राजा जी 'दादा राजा' कहते थे। श्री राजा जी का

---

*इस पृष्ठ के सिवा 'हयात जावेद' प्रथम भाग के पृष्ठ ९२, ११६, १३८ और दूसरे भाग के ४४५ में भी श्री राजा जी का उल्लेख है। 'खतूत सर सैयद' नाम से उर्दू ग्रंथ निज़ामी प्रेस बदायूँ (U. P.) से सन् १९२४ ई० में मुद्रित में राजा महोदय के नाम का एक पत्र श्री सर सैयद साहब की ओर से है लेखक

परिचय Dictionary of Indian Biography by C. E. Buckland published by Swan Sonnenschein & Co. London (1906 A.D.) के पृष्ठ २६६ में और अधिक मिल सकता है।

हाँ, यह कि श्रीस्वामीजी ने चौदहवां समुल्लास क्यों लिखा अथवा यह कि उन्होंने कुरान व इस्लाम के विषय में क्यों लिखा ? इस प्रश्न का उत्तर सुगमता के साथ मिल जाता है जब कि इस बात को सन्मुख रखा जाय कि उस समय (श्री स्वामी जी के कार्य काल अथवा उससे कुछ पूर्व काल) में मुसलमानों में धार्मिक जागृति थी और उस जागृति के कारण अनेक लोग विशेष कर हिन्दू अपने धर्म को तुच्छ समझ कर मुसलमान हो गये थे अथवा हो रहे थे। ऐसी दशा में श्री स्वामी जी ने उचित समझा होगा कि लोगों को कुरान के आशय से सचेत किया जाय ताकि लोग कुरान के मत को श्रेष्ठ समझ कर मुसलमान न बनें।

मैं कहता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति इस बात पर विचार करे कि उसके आस-पास या जिले में श्री स्वामी जी के कार्य-काल में हिन्दुओं की क्या दशा थी और कौन सा पढ़ा या अनपढ़ हिन्दू उनके कार्य-काल में अथवा उनके कार्य-काल से कुछ पहिले मुसलमान हुआ था। ऐसी दशा में वह अवश्य यह जानेगा कि धार्मिक दृष्टि से इस्लाम का अच्छा प्रभाव हिन्दुओं पर था अथवा यह कि मुसलमानों से सम्बन्ध रखने वाली अनेक बातें हिन्दुओं में प्रचलित थीं। उदाहरणार्थ जानना चाहिये कि अनेक हिन्दुओं में ताजिया पूजने की प्रथा थी और विद्या आरम्भ का श्री गणेश

'बिस्मिल्ला' से होता था। अनेक हिन्दुओं में फ़ारसी व उर्दू के पठन-पाठन का भारी चलन था और ऐसे लोग पत्रों के आरंभ में 'बिस्मिलाहिर् रहिमानिर् रहीम लिखते थे—इत्यादि।

पाठकों को यह भी ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है कि श्री स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश को सत्य २ अर्थ प्रकाश करने के विचार से लिखा है। वह चाहते थे कि मुसलमानों में भी सत्य ज्ञान का प्रचार हो। यही कारण था कि अनेक स्थानों पर उन्होंने इस्लाम के विषय में व्याख्यान दिये और यही कारण है कि चौदहवें समुल्लास के अन्तिम भाग में उनका कथन इस प्रकार है:—

"यह तो बहुत थोड़ा सा दोष प्रकट किया इस लिए कि लोग धोखे में पड़कर अपना जन्म व्यर्थ न गमावें। जो इसमें थोड़ा सा सत्य है वह वेदादि विद्या पुस्तकों के अनुकूल होने से जैसे मुझको ग्राह्य है वैसे अन्य भी मजहब के हठ और पक्षपात रहित विद्वानों और बुद्धिमानों को ग्राह्य है।"

कब लिखा गया

नवम्बर सन् १८७८ ई० में हिन्दी में कुरान तैयार हुआ था। सन् १८८३ ई० में श्री स्वामी जी महाराज स्वर्गलोक को सिधारे थे। फलतः इसी काल के बीच में चौदहवां समुल्लास लिखा गया है। परन्तु समीक्ष्यपद ८० को समीक्षा में जो शब्द हैं उनके कुछ शब्दों से भी इस बात का कुछ न कुछ पता चलता है कि चौदहवां समुल्लास कब लिखा गया है—देखिये समीक्षक के कुछ शब्द यह हैं:—

"क्योंजी आजकल रूस से रूम आदि और इंग्लैण्ड ने मिश्र की दुर्दशा कर डाली फरिश्ते कहाँ सो गये?" अब सब से पहले

यह जानना चाहिये कि रूम से अभिप्राय टर्की राज्य से ही प्राचीन रोम या रूस राज्य का एक भाग तुर्कों के अधिकार में इसी कारण टर्की का राज्य ही रूम का बोधक है। भार सुप्रसिद्ध मुसलमान विद्वान मौलाना शिबली नोमानी ने सन् १ ई० में टर्की, मिश्र व शाम देश का भ्रमण किया था। उनकी य पत्री सन् १८९४ ई० में प्रथम बार मुफीद आम प्रेस आगर छपी है। उसका नाम है—'सफर नामः रूम व मिस्र व शा यह उर्दू में है और उर्दू के अच्छे पुस्तकालयों में देखने को सकती है।

स्वर्गीय मौलाना हाफिज अब्दुर रहिमान अमृतसरी सन् १८९८ ई० में इस्लामी देशों की यात्रा के निमित्त भारत प्रस्थान किया था। उनकी यात्रा-पत्री उर्दू में 'सफर नामा ब इसलामिया' के नाम से सन् १९०५ ई० में लाहोर के मुफीद नाम के प्रेस में छप कर प्रकाशित हुई है। इससे भी सिद्ध है कि रूम का अभिप्राय टर्की से है। निदान इस बात की अनेक अन्य ग्रन्थों से हो सकती है कि रूम से अभिप्राय से ही है।

अंग्रेजी में 'इन्सायकलोपीडिया ब्रीटानिका' नाम का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसका चौदहवां संस्करण १९२९ ई० में अमरी के संयुक्त राज्य में छपा है। इस अपूर्व ग्रन्थ के बाईसवें भाग पृष्ठ ५८८ से टर्की (Turkey) का वर्णन आरम्भ होता और पृष्ठ ६११ से पता चलता है कि रूस ने टर्की के विरुद्ध

है अप्रैल सन् १८७७ ई० को युद्ध ठाना था। सन् १८७८ ई० में १
है जुलाई को विरोध का अन्त हुआ था।

त ं उक्त अपूर्व ग्रन्थ के आठवें भाग में पृष्ठ ३३ पर मिस्र अर्था
८६ इजिप्ट (Egypt) का वर्णन आरंभ है और पृष्ठ ६३ से विदि
ात्र होता है कि इङ्गलैण्ड (व फ्रांस) ने सन् १८७६ ई० में मिस्र
ा ें अपना अधिकार जमाया था और इङ्गलैण्ड व मिस्र के बीच
म जैसा उक्त सन् तथा उसके पहले व बाद में भी सम्बन्ध रा
िन है उसका उल्लेख भी पृष्ठ ६३ के पहले व बाद में बहुत कु
मिलता है।

मैंने तो उक्त ग्रन्थ का उल्लेख विशेष रूप से इस कारण किर
है कि उक्त अपूर्व ग्रन्थ प्रत्येक बड़े पुस्तकालय में सुगमता के सा
देखा जा सकता है परन्तु रूस व रूम और इंग्लैण्ड व मिस्र
सम्बन्ध रखने वाली बातें अन्य ग्रन्थों में भी देखी जा सकती
और इनसे इस बात पर कुछ न कुछ प्रकाश अवश्य पड़ता है ि
चौदहवें समुल्लास के लिखे जाने की नौबत कब आई थी।

चौदहवें समुल्लास के रचना-काल के विषय में अब तक ज
कुछ लिखा गया है मेरे विचार से उससे परिणाम यह निकलत
है कि सन् १८७५ ई० के आरम्भ काल या उससे कुछ ही पहि
चौदहवां समुल्लास किसी न किसी रूप में लिखा गया था। उस
समय की सामग्री संशोधित व सम्बंधित होकर सन् १८८४ ई० ं
संस्करण में शामिल हुई थी।

नेहरा प्रसाद

मौलवी आलिम फ़ाज़िल की कुछ अन्य पुस्तकें

- महर्षि दयानन्द सरस्वती
- महर्षि दयानन्द कहां और कब
- सत्यार्थ प्रकाश की व्यापकता
- बक़र ईद
- विद्यामन्दिर
- मनोरंजक हिसाब
- पुष्पांजलि
- ज्ञान गुदड़ी
- मेरी ईरान यात्रा

(चेतावनी)

सत्यार्थप्रकाश विषयक दो ट्रैक्ट हिन्दी व अंग्रेजी में अलग अलग शीघ्र प्रकाशित होंगे। 'गाय और कुरान' नाम की पुस्तक का प्रकाशन भी बहुत ही शीघ्र होगा।

श्री स्वामी जी दयानन्द जी महाराज के भ्रमण से संबन्ध रखने वाला नक़शा भी तैयार हो गया है। उसका दाम चार आना होगा।

मिलने का पता

मैनेजर आलिम फ़ाज़िल बुक डिपो

११५ मुहतशिम गंज—इलाहाबाद

मुद्रक—विश्वप्रकाश, कला प्रेस, प्रयाग।

ओ३म्

भारत में ईसाई

(महेशप्रसाद, मौलवी आलिम फ़ाज़िल)

अनेक लेखकों का मत है कि भारत में ईसाई-धर्म का बीजवपन प्रभु ईसा मसीह के एक ऐसे शिष्य ने किया था जो उनके बारह शिष्यों में से एक था, अर्थात् उन्नीस सौ वर्ष से भी अधिक समय व्यतीत हुआ जब ईसाई-धर्म का प्रचार भारत में किया गया था। परन्तु चिरकाल तक उसकी दशा बहुत अच्छी नहीं रही और यहाँ उसका प्रसार नहीं हो सका। सन् १४९८ ई० में जब सुप्रसिद्ध पुर्चगीज वास्को डी गामा भारत में आया और उसके पश्चात् पुर्चगीजों तथा कुछ अन्य योरोपीय जातियों की शक्ति भारत में प्रबल हुई तब ईसाई-धर्म का जोर बढ़ा और अब बीसवीं सदी में तो आश्चर्यजनक गति से उसका प्रसार बढ़ रहा है।

ब्रिटिश भारत, देशी राज्य ब्रिटिश बलोचिस्तान अण्डमन व निकोबार (ब्रह्मा और सिलोन को छोड़

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक ... 5345
दयानन्द महिला ...

कर) में सन् १९०१ ई० की जन-गणना की रिपोर्ट के अनुसार ईसाइयों की संख्या २७,८९,६२२ थी। सन् १९३१ ई० की जनगणना में यह संख्या ५९, ६५,६५७ और सन् १९४१ ई० की जनगणना में लगभग ६३ लाख हो गई। समस्त भारत में जितने ईसाई हैं उसके आधे से कुछ अधिक ही दक्षिण-भारत में हैं। मदरास-प्रान्त में प्रत्येक एक हजार में ईसाइयों की संख्या ४० ठहरती है। ट्रावंकोर व कोचीन राज्य, आसाम, बिहार, बङ्गाल और पंजाब में भी उनकी संख्या में बहुत वृद्धि हुई है।

जनगणना की विस्तृत रिपोर्टों के आधार पर यह दिखलाते हैं कि भारत के कुछ प्रान्तों में सन् १९०१ ई० की अपेक्षा सन् १९३१ में उनकी संख्या कहाँ तक बढ़ी है—

प्रान्त या राज्य	सन् १९०१ ई०	सन् १९३१ ई०
आसाम	३५,९६९	२,४९,७४६
संयुक्त प्रान्त	१,०२,४६९	२,०७,८९६
पंजाब	६५,८११	४,१९,३५३
मैसूर	५,०५९	८७,५३८

हैदराबाद	२२,९९६	१,५१,३८२
ट्रावङ्कोर	६,९७,३८७	१६,०४,४७५
कोचीन	१,९८,२३९	३,३४,८७०

एक ईसाई लेखक का मत है कि जितने ईसाई शहरों में हैं, उसके चार गुने देहातों में हैं।

भारत के जो स्थान पुर्चगीज व फ्रांसीसियों के अधिकार में हैं, यदि वहाँ के ईसाइयों की भी संख्या जोड़ ली जाय तो ईसाइयों की संख्या और अधिक ठहरती है। सन् १९३१ ई० में फ्रांसीसी भारत की २,८६,४१० जनता में से कुल ईसाई २४,९२८ थे और पुर्चगीज भारत में कुल ईसाई २,८९,२०३ थे, अर्थात् पुर्चगीज भारत की सारी जनता ५,७९,९७० का लगभग आधा भाग ईसाई है।

सन् १९३९-४० ई० में ईसाई-धर्म-प्रचारकों आदि में विदेशी ईसाई स्त्री-पुरुषों की संख्या ४,९३५ थी। कई प्रदेशों में इन विदेशी कार्यकर्ताओं की संख्या इस प्रकार रही है—

प्रान्त	संख्या	प्रान्त	संख्या
आसाम	१४९	संयुक्तप्रान्त	७००

बङ्गाल	४८४	पञ्जाब	३९०
बिहार	३३०	मध्यप्रदेश व बरार	४००
बम्बई	६४३	मदरास	९१०

विदेशी ईसाई अनेक देशों के हैं। इनमें से युद्ध के कारण जर्मनी व इटली के सभी अथवा अधिकांश भारत-सरकार के आदेशानुसार नज़रबन्द हैं, अतएव उनकी संख्या यहाँ नहीं दी गई है।

हममें से बहुतेरे लोग ईसाइयों की संख्या का अन्दाजा केवल जनगणना की रिपोर्टों से लगाते हैं, जो प्रति दस वर्ष पर सरकार द्वारा प्रकाशित हुआ करती है। निस्सन्देह ये रिपोर्टें बड़े काम की होती हैं, परन्तु जो रिपोर्टें स्वयं ईसाइयों के द्वारा समय-समय पर प्रकाशित हुआ करती हैं, वास्तव में वे बहुत ही महत्वपूर्ण होती हैं; क्योंकि ऐसी रिपोर्टों से ईसाइयों की बढ़ती हुई संख्या का ही पता नहीं लगता, बल्कि उन मूल कारणों का भी पता लगता है जिनसे उनकी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है।

प्रोटेस्टेण्ट ईसाई

सन् १९४० ई० में नागपुर की नेशनल क्रिश्चि-

यन कौंसिल के द्वारा "डायरेक्टरी आफ क्रिश्चियन मिशन्स एण्ड चर्चेज १९४०-१९४१" के नाम से एक उपयोगी पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसमें सन् १९४० ई० से कुछ पहले की बातें हैं। इसमें प्रोटेस्टेण्ट ईसाइयों की बाबत कम से कम ये बातें मालूम होती हैं—

(१) भारत में ईसाइयों की संख्या।

(२) ईसाई धर्म-प्रचार के लिये देशी व विदेशी काम करनेवाली संस्थाओं की संख्या।

(३) ईसाइयों के उद्योग-धंधे आदि।

उक्त डायरेक्टरी से प्रकट होता कि भारत में प्रोटेस्टेण्ट ईसाइयों की जो सोसाइटियाँ अथवा संस्थायें काम कर रही हैं उनमें १४७ का प्रधान कार्यालय बाहर के जिन देशों में रहा अथवा है उसका लेखा इस प्रकार है—

देश	संख्या	देश	संख्या
१—इँग्लेण्ड	४३	४—स्वीडन	६
२—स्काटलेण्ड	७	५—नारवे	२
३—आयर्लेण्ड	५	६—जर्मनी	२

७–संयुक्तराज्य (अमरीका)	६१	१०–डेनमार्क	३
८–कनाडा	६	११–फिनलेण्ड	१
९–आष्ट्रेलिया	८	१२–न्यूजी लेण्ड	२
		१३–स्वीज़र्लेण्ड	१

परन्तु उपर्युक्त १४७ के सिवा ८ ऐसी संस्थायें हैं जिनमें से प्रत्येक के दो मन्त्री हैं और वे दो भिन्न-भिन्न देशों में रहते हैं। इस प्रकार कुल १५५ का प्रधान कार्यालय विदेशों में ठहरता है। किन्तु इनके अतिरिक्त ४१ संस्थाएँ और हैं, जिनका प्रधान कार्यालय भारत के ही किसी न किसी प्रदेश में है।

पत्र-पत्रिकायें और छोटी-बड़ी पुस्तकें आदि प्रचार-कार्य के निमित्त कुछ कम उपयोगी चीजें नहीं हैं। इस विषय में भी प्रोटेस्टेन्ट ईसाइयों की ओर से बहुत कुछ हो रहा है। इनके प्रेसों की संख्या ४३ है। अब ज़रा यह जान लेना चाहिए कि कुछ प्रेसों के स्थापित होने की नौबत कब आई थी—

प्रेस का नाम व स्थान	स्थापना
१—लीपज़िग इवंजिलिकल, ट्रानकोबार	१७१२ ई०
२—बैपटिस्ट मिशन, कलकत्ता	१८१८ ,,

३—उड़ीसा मिशन, कटक १८३८ ,,
४—वेसलियन मिशन, बङ्गलोर १८४० ,,
५—मोरावियन मिशन, लद्दाख़ १८८३ ,,
६—मेथाडिस्ट मिशन, मद्रास १८८५ ,,

पत्र-पत्रिकायें दो सौ से कुछ कम (और १७० से अधिक) देश के भिन्न-भिन्न भागों से भिन्न भिन्न भाषाओं में निकलती हैं। लिखित प्रचार के निमित्त १४ से कम सोसायटियाँ नहीं हैं। इनके द्वारा भिन्न-भिन्न भाषाओं में छोटी-बड़ी पुस्तकों व ट्रैक्टों आदि का प्रचार हुआ है। बाइबिल (जो ईसाइयों का मूल-ग्रंथ है) का अनुवाद १५ भाषाओं में हो चुका है। परन्तु बाइबिल के किसी न किसी खण्ड का अनुवाद ४३ भारतीय भाषाओं में अलग हो चुका है। इलाहाबाद की नार्थ इण्डिया क्रिश्चियन ट्रैक्ट एण्ड बुक सोसायटी (स्थापित सन् १८४८ ई०) की रिपोर्ट (१-७-४० से ३०-६-४१ तक) से पता चलता है कि उक्त वर्ष इस संस्था की ओर से प्रकाशनार्थ पाँच हजार चार सौ अरसठ रुपया एक आना व्यय हुआ था। यह एक उदाहरण है,

जिससे प्रकट होता है कि इस मद में काफ़ी अधिक धन-व्यय किया जाता है।

रोमन कैथोलिक

इनका कार्य प्रोटेस्टेण्ट ईसाइयों से बिलकुल पृथक् होता है। भारत में प्रोटेस्टेण्ट ईसाइयों की ओर से सन् १७०६ ई० में कार्य आरम्भ हुआ था। रोमन कैथोलिकों की ओर से इससे बहुत पहले ही सन् १४९८ ई० या इसके बाद ही कार्य आरम्भ हुआ था। किन्तु संख्या की दृष्टि से भारत में रोमन कैथोलिक लोग प्रोटेस्टेण्ट ईसाइयों से बहुत ज्यादा नहीं बढ़े हैं, तथापि यह न समझना चाहिए कि ये लोग कुछ कम बढ़ रहे हैं। कई प्रदेशों में इनकी संख्या जितनी बढ़ी है उसका लेखा इस प्रकार है—

प्रान्त या राज्य	सन्१९०१	सन्१९३१
पंजाब	७,१०१	५८,२०६
कोचीन	७९,२२१	१,०९,५०३
मैसूर	३७,६१६	५२,३४७
ट्रावङ्कोर	१,३२,५८८	३,६०,२१७
हैदराबाद	११,६४९	२१,२५९

बड़ौदा	४०४	२,०७८
कश्मीर	३३	१२४

'सोसाइटी आफ़ जीसस' के नाम से सेण्ट इग्नाटियस लोओला ने पेरिस में एक संघ सन् १५३४ ई० में स्थापित किया था। इस संघ के अनुयायी जेसुइत कहे जाते हैं। किसी अन्य संघ या विचारधारा के कारण अनेक रोमन कैथोलिक—कैपूचिन, मिल-हिल, अगस्टीनियंस, फ्रांसिसकन्स आदि भी कहे जाते हैं, किन्तु ऐसे लोग चाहे जिस देश में हों, रोम (इटली) के पोप को ही अपना सबसे बड़ा प्रधान मानते हैं।

भारत में इटली, फ्रांस, जर्मनी, पुर्तगाल आदि अनेक देशों के रोमन कैथोलिक कार्य कर रहे हैं। इनमें से सब लोग एक ही संघ या विचार-धारा के नहीं हैं। सम्भवतः जेसुइत ईसाइयों के द्वारा भारत में अधिक कार्य हुआ है। सम्राट् अकबर के दरबार में जेसुइत ही आये थे। स्पेन-निवासी सुप्रसिद्ध मिशनरी सेण्ट फ्रांसिस जेवियर जेसुइत था। यह ६ मई सन् १५४२ ई० को भारत में पहुँचा था। इसका

शव चाँदी के एक सुन्दर सन्दूक़ में अब भी गोआ में सुरक्षित है।

हज़ारों ईसाई उसके दर्शन के निमित्त जाया करते हैं और यदि सब नहीं तो अनेक उसके पैरों को चूमते हैं, जिनके द्वारा उसने धर्म के हेतु बहुत बड़ी यात्रा की थी। सन् १५४० ई० में उसने रोम (इटली) से भारत के लिए प्रस्थान किया था। सन् १९४० ई० में इस बात को चार सौ वर्ष व्यतीत हुए। इस अवसर पर उस धर्म प्रेमी की स्मृति में 'इन जेवियर्स फुटस्टेप्स' नाम का एक अति सुन्दर ग्रन्थ कैथोलिक मिशन प्रेस आनन्द (बम्बई प्रान्त) से सन् १९४० ई० में प्रकाशित हुआ है। इससे ईसाई-धर्म प्रचार-सम्बन्धी अनेक बातोंका पता चलता है।

रोमन कैथोलिक ईसाइयों का कार्य उत्तरी भारत के कुछ स्थानों—छोटा नागपुर (राँची) व पञ्जाब में कुछ कम ज़ोरों के साथ नहीं हो रहा है, किन्तु इनका विशेष ज़ोर दक्षिण भारत में है।

आरमेनियन स्ट्रीट मदरास के गुड पास्टर प्रेस से कैथोलिक डायरेक्टरी नाम की पुस्तक प्रकाशित हुआ

करती है। इसका जो संस्करण सन् १९४१ ई०का है उससे रोमन कैथोलिकों की संस्थाओं व उनके कार्यकर्ताओं आदि का बहुत सा परिचय मिल जाता है। इस डायरेक्टरी व पूर्वलिखित प्रोटेस्टेण्ट ईसाइयों की डायरेक्टरी के अनुसार ईसाई संस्थाओं की संख्या इस प्रकार है—

विषय	प्रोटेस्टेण्ट	कैथोलिक
१—कृषि-विषयक	७५	१
२—कोआपरेटिव सोसायटीज	४६	२
३—कला-कौशल	१९५	१३५
४—औषधालय	३४९	२७६
५—अस्पताल	२८९	६०
६—कोढ़ीखाने	६७	९
७—क्षय-रोगी-अस्पताल	११	...
८—गूँगों व बहरे आदि	१५	...
९—अनाथालय	१५३	२१५
१०—अन्य	१७७	...

कला-कौशल-विषयक संस्थाओं के सिवा यदि कालेजों व छोटे-बड़े स्कूलों की संख्या भी सम्मिलित

की जाय तो संस्थाओं की संख्या बहुत अधिक ठहरती है। सन् १९३४ ई० या इस सन् के आस-पास में ईसाइयों के अनेक स्कूल टूटे। इससे अनेक लोगों ने समझा कि ईसाइयों के कार्य में शिथिलता आ गई है। किन्तु वास्तविक बात यह है कि अक्षर-बोध करानेवाले स्कूलों व विद्यालयों के बदले शिल्प-कला के स्कूलों व अस्पतालों को अपने उद्देश्य के निमित्त अधिक उपयोगी समझा गया, इस कारण अधिक शक्ति व सामग्री उक्त दोनों बातों के निमित्त लगा दी गई है।

दक्षिण-भारत के कङ्कनाडी (मङ्गलूर) नामी स्थान में चिकित्सा-विषयक एक संस्था है। सन् १९३९ ई० से सम्बन्धवाला लेखा (केवल उस संस्था का) इस प्रकार रहा है :—

१८९ कोढ़ियों की चिकित्सा कुष्ठाश्रम में हुई।

३५३८ ऐसे स्त्री पुरुषों की चिकित्सा हुई जो वहाँ के अस्पताल में रहे।

३५६६० बाहरी रोगियों की संख्या रही।

३८७५ पत्र ऐसे थे, जिनके द्वारा केवल रोगों की दवा बताई गई।

१५६०८ पैकट तथा पार्सल औषधियों के भेजे गये।

प्रोटेस्टेण्ट और रोमन कैथोलिक के सिवा कुछ अन्य प्रकार के भी ईसाई हैं। परन्तु भारत में उक्त दोनों का ही जोर बहुत हो रहा है। इस कारण केवल उक्त दोनों के विषय में ही कुछ बतलाना आवश्यक था। हाँ, यह कहना चाहता हूँ कि बड़ा भारी खयाल यह है कि ईसाई-धर्म-प्रचार के निमित्त जो कुछ हो रहा है वह सर्वथा विदेशी द्रव्य व विदेशी व्यक्तियों के बल बूते पर है। परन्तु इस बात को सोलहो आना ठीक न मानना चाहिए, क्योंकि सन् १९०५ ई० से भारतीय ईसाइयों की एक संस्था 'नेशनल मिशनरी सोसाइटी' के नाम से स्थापित है। इसके काम-काज और आय-व्यय की सारी जिम्मेदारी भारतीय ईसाइयों पर है। इसका प्रधान कार्यालय आजकल मदरास में है। वहाँ से संस्था की जो रिपोर्ट सन् १९४१ ई० की प्रकाशित हुई है उससे प्रकट है कि वार्षिक व्यय लगभग ५६, १३३ रुपया हुआ और कुल आय लगभग ५५,९७६ रुपया रही।

इसकी ओर से भारत के भिन्न-भिन्न प्रान्तों के दस स्थानों में कार्य हो रहा है, और यही वह बात है जो विशेष महत्व की है।

अब सन् १९४४ ई० है और इस काल के लगभग बीस-पचीस वर्ष पूर्व से ही ऐसा सुन रहा हूँ कि ऊँच जाति का कोई व्यक्ति अब ईसाई नहीं होता। नीच या जङ्गली जाति के लोग किसी कारण से ईसाई होते हैं। उनके ईसाई होने से कुछ बिगड़ता नहीं, हिन्दुओं का सर्वनाश नहीं हो सकता इत्यादि। इस प्रकार के विचार के निमित्त यह कहना काफी है कि हिन्दू क्या थे और कितने थे ; किन्तु अब कितने रह गये हैं और किस दशा में हैं। ऐसी अवस्था के होते हुए यदि किसी समय सर्वनाश हो जाय तो आश्चर्य क्या ?

कभी-कभी किसी ईसाई की ओर से यह घोषणा होती है कि भारतवर्ष ईसाई न होगा क्योंकि यहाँ जागृति हो गई है यहाँ की संस्कृति ऐसी है, यहाँ के लोगों में धार्मिक-भाव इस ढङ्ग का पाया जाता है इत्यादि।

यदि उक्त बात सत्य है तो भारत (हिन्दुओं) को ईसाई बनाने के लिये संसार के समस्त ईसाई तन, मन और धन के साथ दिन प्रतिदिन क्यों अधिक ज़ोर मार रहे हैं ?—भारत ईसाई नहीं होगा, इत्यादि—बातें मेरे विचार से नीति पर निर्भर हैं कि उक्त बातों से हिन्दू लोग यह समझें कि ईसाई संसार से स्वयं यह आवाज उठ रही है कि भारत ईसाई नहीं होगा, इत्यादि—तो ऐसी अवस्था में ईसाइयों से सचेत होने की आवश्यकता नहीं और जब हिन्दू लोग अचेत रहेंगे तो ईसाइयों को सावधानी के साथ कार्य करने का उत्तम अवसर प्राप्त रहेगा।

एक और बात यह जानने की आवश्यकता है कि ईसाइयों का कार्य केवल राजनीति की दृष्टि से नहीं हो रहा है। यदि ऐसा होता तो केवल ब्रिटिश साम्राज्य फ्रांस और पुर्तगाल के ही ईसाई भारत में काम करते होते ; परन्तु भारत को ईसाई बनाने के लिये जर्मनी, इटली, हालैंड, नारवे, स्वीडन आदि सभी देशों के ईसाई तन, मन और धन दिन प्रतिदिन अधिक लगा रहे हैं। वास्तव में हमारी संस्कृति को

मिटाने की समस्या है जिसके निमित्त समस्त ईसाई संसार की बदौलत सब कुछ हो रहा है ।

मौलवी आलिम फ़ाज़िल महेशप्रसाद कृत

महर्षि दयानन्द सरस्वती	।।।)	गाय और कुरान	-)
महर्षि दयानन्द कहाँ और कब	।)	बकर ईद	)।।
महर्षि जीवन-दर्शक	।।।)	अमर सत्यार्थ प्रकाश	-)
महर्षि का अपूर्व भ्रमण	)।।	स० प्रकाश पर विचार	-)
दयानन्द काल में रेलमार्ग	-)	विद्यामन्दिर	।-)
श्री सर सैयद अहमद खाँ और स्वामी दयानन्दजी	-)	मनोरञ्जक हिसाब	।-)
स्वामी दयानन्द और कुरान	।)	मेरी ईरान यात्रा	२)
		The Immortal Satyarth Prakash.	-I-

पता—मैनेजर आलिम फ़ाज़िल बुकडीपो,
११५ मुहतशिमगंज, इलाहाबाद

विश्वनाथप्रसाद, ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशी, २००१ ।

प्रकाशक—आलिम फ़ाज़िल बुकडीपो, इलाहाबाद

प्रथम बार—जून, १९४४ ई० ।] [दाम एक आना

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक .. 5345
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

03 JAN 2006
N.C